राजीव

Anuj Presents

फौलादी सिंह और
सुपर क्वीन




डायमंड
की ये तकनीकी पुस्तकें
क्या आपने पढ़ी हैं ?
रेडियो के बारे में पूरी जानकारी व उसके दोषों को दूर करना सिखाने वाली उपयोगी पुस्तक
रेडियो
सर्विसिंग गाईड
वीडियो के बारे में पूरी जानकारी व उसकी खराबियों को दूर करना सिखाने वाली पुस्तक
वीडियो
सर्विसिंग गाईड
10-
ट्रांजिस्टर के बारे में पूरी जानकारी व उसके दोषों को दूर करना सिखाने वाली पुस्तक
ट्रांजिस्टर
सर्विसिंग गाईड
10-
टेलीविजन सम्बन्धी पूरी जानकारी व उसके दोषों को दूर करना सिखाने वाली उपयोगी पुस्तक
टेलीविजन
सर्विसिंग गाईड
10
कोई भी 2 पुस्तकें एक साथ मंगवाने पर डाक व्यय फ्री।
ऑर्डर के साथ आधा मूल्य एडवांस भेजें
डायमंड पॉकेट बुक्स
2715 दरियागंज नई दिल्ली 110002

एक पल वह भी आया जब उन दोनों के बीच दूरी सिर्फ १०० किलोमीटर रह गई।

'मरने के लिए तैयार हो जाओ फौलादी सिंह...।'
फोटान यान के ट्रांसमीटर पर एक गर्जदार आवाज उभरी...।

'हा...हा...हा...।' फौलादी सिंह ने एक जोरदार कहकहा लगाया—'कुत्तो, फौलादी सिंह अजय है अमर है उसे कोई नहीं मार सकता—अपनी खैरियत चाहते हो तो वापस लौट जाओ--और जाकर अपने ग्रह की सनकी रानी सुपर क्वीन को यह सलाह दो कि वह सूरज के सामने से अदृश्य बादलों का टुकड़ा हटा ले—वरना न तुम रहोगे—न तुम्हारा ग्रह रहेगा और न अदृश्य बादल रहेंगे...।'
'तुमने हमारी सुपर क्वीन की शान में गुस्ताखी की है—इसलिए तुम्हें अब और कुछ बोलने की मोहलत नहीं दी जा सकती...तो सम्हालो हमारा वार...।'

और फिर अगले ही पल उस सिगार जैसे यान से लाल रंग की किरणें निकल कर फौलादी सिंह के यान की ओर झपटी...।

इसी उपन्यास से

डायमंड पाकेट बुक्स द्वारा प्रकाशित
रोचक बाल उपन्यास

प्रत्येक का मूल्य ३.

चाचा चौधरी और श्री डब्बू
पल्टू और जादूगर गोंगों
मोटू पतलू और जादूगर कालो मुंड
बिल्लू और बुलबुल का बाग
पिंकलू और जंगल का शैतान
महाबली शाका और कबीलों का दुश्मन
मीकू और बंदर का ज्योतिष
चाचा चौधरी और पीलू की करामात
पिंकी और गहनों के चोर
अंकुर और डाकुओं से टक्कर
फौलादी सिंह और कांच का देश
मोटू छोटू और जूता कम्पनी
महाबली शाका और आदमखोरों का जमाना
चाचा भतीजा और जादूगर की हत्या
मीकू और मौसी के हीरो

डायमंड पाकेट बुक्स

राजीव

फौलादी सिंह और सुपर क्वीन



प्रकाशक :

डायमण्ड पाकेट बुक्स (प्रा०, लि०)

२७१५, दरियागंज (मोती महल के पीछे)

नई दिल्ली-११०००२

वितरक:

पंजाबी पुस्तक भण्डार

दरीबाकलां, दिल्ली-११०००६

मूल्य : तीन रुपये

मुद्रक:

डी० के० प्रिंटिंग प्रेस

१६१७ उल्धनपुर नवीन शाहदरा,

दिल्ली—३२

Fauladi Singh Aur Super Queen : Rs-3.00

फौलादी सिंह और सुपर क्लोन

घड़ी के अनुसार उस समय सुबह के सात बज रहे थे···।

शहर के लगभग सभी लोग जाग चुके थे···।

किसी को इस बात का यकीन नहीं आ रहा था—कि वास्तव में सुबह हो चुकी है···।

सभी लोग अपनी घड़ी को गलत समझ रहे थे···। उन्हें यकीन न आने का एक बहुत बड़ा कारण था···वातावरण में अब भी अन्धेरा छाया हुआ था···सूरज का दूर-दूर तक नामो निशान न था···आकाश में तारे चमक रहे थे।

शहर की आम जनता ही नहीं बल्कि वैज्ञानिक और सरकारी अधिकारी भी इस बात को लेकर परेशान हो उठे थे!

हर के दिल में सिर्फ एक ही सवाल उठ रहा था···सूरज क्यों नहीं निकला···।

हर एक वर्ग अपनी तरह सोच रहा था···।

अनपढ़ जनता सोच रही थी कि किसी बात को लेकर सूर्य देवता नाराज है···इसीलिए आज वह चमक नहीं रहे हैं···।

पढ़ी लिखी समझदार जनता सोच रही थी···कि सभी घड़ियां गलत समय बता रही हैं अभी सूरज निकलने का समय नहीं हुआ है।

वैज्ञानिकों का विचार सबसे अलग था।

किसी वैज्ञानिक का ख्याल था कि सूरज अपना पथ भूलकर आकाश गंगा में कहीं भटक गया है।

कोई वैज्ञानिक यह कह रहा था कि सूरज के अन्दर कोई भयानक विस्फोट हुआ है जिससे वह नष्ट हो गया है।

किसी वैज्ञानिक का विचार था···कि सूरज के अन्दर कोई

रासायनिक परिवर्तन हुआ है इसीलिए उसका प्रकाश पृथ्वी तक नहीं पहुंच पा रहा है।

जितने मुंह उतनी बातें थीं।

इधर से उधर टेलीफोन खड़खड़ाये जा रहे थे।

वायरलेस सन्देश भेजे जा रहे थे।

दो घन्टे के अन्दर-अन्दर दुनिया के सभी इन्सानों को यह मालूम हो गया कि दुनिया के किसी भी देश में आज सूरज नहीं देखा गया।

संसार का हर छोटा बड़ा देश अन्धेरे में डूबा हुआ था।

घड़ी के अनुसार सुबह थी···जबकि जलती हुई स्ट्रीट लाइटें ···घरों और दुकानों के बाहर जलती हुई बत्तियां इस बात का सबूत थीं कि सुबह नहीं रात है।

दुनिया की लगभग सभी प्रयोगशालाओं में बड़े-बड़े वैज्ञानिक जी जान से यह जानने का प्रयास कर रहे थे कि क्या कारण है जो सूरज नहीं निकला।

प्रयोग शालाओं में लगी अत्यन्त शक्तीशाली टेलिस्कोपिक दुरबीनें आकाश में खो गए सूरज को ढूंढ़ने का प्रयास कर रही थीं।

लेकिन अभी तक उन्हें सफलता नहीं मिली थी···सूरज तो दूर उसकी एक किरण भी वैज्ञानिकों को नजर नहीं आई थी।

◻◻

डाक्टर जान प्रयोगशाला के रेस्ट रूम में गहरी नींद सो रहे थे।

रात दो बजे तक वह एक प्रयोग करते रहे थे···उस प्रयोग को पूरा करने के बाद ही वह सोने के लिए रेस्ट रूम में गए थे।

पांच महीने से लगातार डाक्टर जान उस प्रयोग पर दिन रात मेहनत कर रहे थे।

इसीलिए तो प्रयोग पूरा होने के बाद उन्हें जम कर नींद आई थी।

अभी उन्हें सोए हुए मुश्किल से चार घन्टे ही हुए होंगे कि उनकी आंख खुल गई।

उनकी आंख फौलादी सिंह की आवाज के कारण खुली थी जो काफी देर से लगातार रेस्ट रूम में लगे स्पीकर पर उभर रही

जान अंकल, प्रयोग शाला का दरवाजा खोलिए···मैं अन्दर आना चाहता हूं एक बहुत बुरी खबर है।

स्पीकर से निकलने वाली फौलादी सिंह की आवाज डाक्टर जान के कानों से टकराई।

वह हड़बड़ा कर उठ बैठे···उन्हें समझते देर न लगी कि जरूर कोई भयानक घटना हुई है वरना फौलादी सिंह छोटी-मोटी बातों से परेशान होने वाला नहीं है।

बिस्तर से उतर कर वह उस मेज की ओर बढ़ने लगे जिस पर डेक्टा फोन रखा हुआ था।

मेज के पास पहुंच कर उन्होंने डेक्टा फोन चालू किया और उस पर झुकते हुए बोले—'क्या बात है बेटा फौलाद, तुम इतना परेशान क्यों हो ?'

'जान अंकल, गजब हो गया···।' स्पीकर पर फौलादी सिंह की बौखलाई हुई आवाज उभरी···'सुबह के सात बज चुके हैं लेकिन अभी तक आकाश में सूरज नहीं चमका···वातावरण में अन्धेरा छाया हुआ है···आकाश में तारे चमक रहे हैं।'

'क्या बक रहे हो तुम···।' डाक्टर जान को गुस्सा आ गया 'कहीं तुमने सुबह-सुबह गलती से नशा तो नहीं कर लिया

'आप जानते हैं अंकल मैं शराब से नफरत करता हूं···।' फौलादी सिंह की आवाज आई।

डाक्टर जान पर गम्भीरता छाती चली गई···वह जानते थे कि फौलाद उनसे झूठ नहीं बोल सकता···उनका दिल किसी अनजानी आशंका से धड़क उठा।

'मैं प्रयोगशाला का दरवाजा खोल रहा हूं तुम फौरन कन्ट्रोल रूम में पहुंचो···मैं तुम्हें वहीं मिलूंगा।' इतना कहकर उन्होंने जेब से छोटा सा रिमोट कन्ट्रोल यन्त्र निकाल कर उसमें लगा एक बटन पुश कर दिया।

बटन पुश करते ही अन्डर-ग्राउण्ड प्रयोग शाला का मुख्य गेट खुल गया।

फौलादी सिंह जैसे ही अन्दर प्रविष्ट हुआ···गेट अपने आप बन्द हो गया।

फौलादी सिंह तेजी से कन्ट्रोल रूम की ओर बढ़ने लगा… उसके चेहरे पर परेशानी की रेखाएं साफ देखी जा सकती थीं

उधर डाक्टर जान ने भी जल्दी-जल्दी मुंह पर पानी के छीं मारे और रेस्ट रूम से निकल कर कन्ट्रोल रूम की ओर च दिए।

कन्ट्रोल रूम के गेट पर खड़े रोबो ने डाक्टर जान को देख ही जोरदार सैल्यूट मारा।

डाक्टर जान ने सिर हिलाकर जवाब दिया और कन्ट्रो रूम का गेट खोलकर अन्दर प्रविष्ट हो गए।

कन्ट्रोल रूम के अन्दर…कन्ट्रोल सीट पर रोबो नम्बर द बैठा हुआ अन्तरिक्ष में नजर रख रहा था।

डाक्टर जान ने दस रोबो का निर्माण किया था…उन रोब को उन्होंने एक-दो-तीन नम्बर दे रखा था…दस नम्बर रोबो उ सब का इन्चार्ज था।

डाक्टर जान का आधे से ज्यादा काम वह रोबो ही कर थे।

डाक्टर जान को कन्ट्रोल में आया देखकर नम्बर दस हड़बड़ गया…उसने फौरन सैल्यूट मारा और कन्ट्रोल सीट छोड़क खड़ा हो गया।

'कुछ गड़बड़ है क्या नम्बर दस…!' डाक्टर जान ने कन्ट्रो सीट सम्भालते हुए पूछा।

'यस मास्टर…।' नम्बर दस जल्दी से बोला—'सुबह हो ग है और अभी तक सूरज नहीं निकला है।'

'इतनी गम्भीर घटना है और तुमने मुझे खबर नहीं की…' डाक्टर जान सामने लगी स्क्रीन को ध्यान से देखते हुए गुस्से बोले—।

'मास्टर पांच महीनों के बाद आज आपको चैन की नी आई थी…इसलिए मैंने आपको जगाना ठीक नहीं समझा।'

नम्बर दस उनका कितना ख्याल रखता है यह देखकर डाक्ट जान का चेहरा खुशी से खिल उठा।

उसी समय फौलादी सिंह ने कन्ट्रोल रूम में कदम रखा।

'कुछ पता चला अंकल क्या बात है…। सूरज क्यों नहीं निकला।'

'पता लगाने की कोशिश कर रहा हूं बेटा फौलाद।' डाक्टर जान अन्तरिक्ष पर नजर रखने वाली स्क्रीन को ध्यान से देखते हुए बोले—।

स्क्रीन पर चन्द्रमा और लाखों तारे नजर आ रहे थे···किन्तु सूरज का कहीं नामों निशान तक न था।

कुछ देर तक स्क्रीन को घूरने के बाद उन्होंने स्क्रीन के पास लगा रेडियो टेलिस्कोप यन्त्र चालू कर दिया।

उनके इशारे पर पास खड़ा नम्बर दस यन्त्र के छोटे से स्क्रीन पर उभरने वाले संकेतों को फुर्ती से नोट करने लगा।

चार मिनट बाद स्क्रीन पर संकेत उभरना बन्द हो गए।

नम्बर दस ने नोट किए हुए संकेत डाक्टर जान की ओर बढ़ा दिए।

डाक्टर जान कागज लेके ध्यान से उन संकेतों को पढ़ने लगे।

जैसे-जैसे डाक्टर जान उन संकेतों को पढ़ रहे थे वैसे-वैसे··· उनके माथे पर सिलवटें पड़ती जा रही थीं।

'क्या बात है अंकल···।' फौलादी सिंह उनके चेहरे पर होने वाले परिवर्तन को ध्यान से देखता हुआ बोला—'आप परेशान लग रहे हैं।'

'परेशानी की बात ही है फौलाद।' डाक्टर जान बोले—'यह संसार एक बहुत बड़े खतरे में घिरने वाला है। यह भी हो सकता है कि हमारी पृथ्वी के साथ-साथ आकाश गंगा के सभी ग्रह नष्ट हो जाएं।'

'क्या मतलब मैं कुछ समझता नहीं अंकल।'

'इस समय मैं तुम्हें ठीक से कुछ समझा भी नहीं पाऊंगा फौलाद···।' डाक्टर जान गम्भीरता से बोले—'इन संकेतों को पढ़ कर मेरे दिल में जो ख्याल आया है उसकी पुष्टि के लिए मुझे कम से कम एक घन्टे का समय चाहिए···अन्तरिक्ष से सम्बन्धित मैं अपनी प्रयोग शाला के सभी यन्त्र चालू करके उनके संकेतों को नोट करूंगा उसके बाद हिसाब लगाऊंगा···फिर जाकर कहीं असलियत का पता चलेगा···।'

'ठीक है अंकल मैं एक घंटा रेस्ट रूम में इन्तजार करूंगा।' इतना कह कर फौलादी सिंह वहां से चल दिया।

उसके बाहर निकलते ही कन्ट्रोल रूम का गेट बन्द हो गया।

डाक्टर जान और नम्बर दस कन्ट्रोल रूम में लगे अन्तरिक्ष से सम्बन्ध रखने वाले सभी यन्त्र चालू करने लगे।

□□

आकाश गंगा में पृथ्वी से अस्सी प्रकाश वर्ष दूर एक विशाल ग्रह पर···पृथ्वी ही की तरह दुनिया आबाद थी।

प्रकाश वर्ष—प्रकाश की दूरी एक सेकेण्ड में तीन लाख किलो मीटर होती है···और जितनी दूरी प्रकाश एक वर्ष में तय करता है उसे हम एक प्रकाश वर्ष कहते हैं।

पृथ्वी से अस्सी प्रकाश वर्ष दूर जिस ग्रह पर दुनिया आबाद थी उसका नाम क्रोटन था।

क्रोटन के प्राणी पृथ्वी पर रहने वालों से अधिक बुद्धिमान थे।

क्रोटन पर रहने वाले मनुष्यों का आकार प्रकार रहन-सहन बिल्कुल पृथ्वी पर रहने वाले मनुष्यों की तरह ही था।

क्रोटन का विज्ञान पृथ्वी के विज्ञान से कहीं आगे था।

सुपर क्वीन क्रोटन की महारानी थी।

सुपर क्वीन इतनी अधिक सुन्दर थी कि उसे देख कर सुन्दरता भी शर्म से पानी-पानी हो जाए।

वह जितनी सुन्दर थी उतनी ही ज्यादा जालिम और खतरनाक भी थी।

क्रोटन पर एक कहावत मशहूर थी वो यह कि नागिन का काटा एक बार बच सकता है लेकिन जिसे सुपर क्वीन काट ले वह नहीं बच सकता।

यह सच भी था। सुपर क्वीन को सिर्फ दो चीजें पसन्द थीं···एक मनुष्य का ताजा-ताजा गर्म-गर्म खून वह बहुत पसन्द करती थी···दूसरे नम्बर पर उसे जो चीज पसन्द थी वह था क्रोटन पर पाए जाने वाले सबसे खतरनाक जहरीले सांप किंग स्नेक का जहर।

सुपर क्वीन हर रोज दो बार किंग स्नेक से अपने आपको डसवाती थी।

उसके शरीर में जहर ही जहर भरा हुआ था···जहर उसकी जिन्दगी था उसका चैन था।

क्रोटन पर बीस बड़े वैज्ञानिकों का एक ग्रुप था···जिसका

काम था बाहर और अन्दरुनी खतरों से कोटन की रक्षा करना।

उन बीस वैज्ञानिकों ने कोटन को एक अत्यन्त शक्तिशाली ग्रह बना दिया था।

उन बीस वैज्ञानिकों के पास अपनी-अपनी एक अलग प्रयोगशाला थी…और हर एक वैज्ञानिक के अन्डर में सैकड़ों जूनियर वैज्ञानिक काम करते थे।

बीस बड़े वैज्ञानिकों के ग्रूप का इन्चार्ज प्रो० डान ऐक्मो था।

प्रो० डान ऐक्मो कोटन ग्रह का सबसे बड़ा और महान वैज्ञानिक था…ग्रह को शक्तिशाली बनाने में उसका बहुत बड़ा हाथ था।

डान ऐक्मो की उम्र एक सौ तीस वर्ष थी…फिर भी वह जवानों की तरह सीना तान कर चलता। इस उम्र भी उसके अन्दर चीते जैसी फुर्ती मौजूद थी।

सुपर क्वीन के महल में एक विशाल कन्ट्रोल रूम था।

प्रो० डान ऐक्मो कन्ट्रोल रूम में बैठकर पूरे ग्रह पर नजर रखता था…ग्रह पर कब क्या हो रहा है एक-एक पल की रिपोर्ट उसे सुपर क्वीन को देनी होती थी।

करीब एक साल पहले सुपर क्वीन के दिमाग में एक अत्यन्त खतरनाक विचार ने जन्म लिया था। वह विचार था समस्त ब्रह्माण्ड पर हुकूमत करना।

अपना विचार उसने प्रो० डान ऐक्मो और बीस वैज्ञानिकों को बता दिया था। उन लोगों को उसने एक वर्ष का समय आक्रमण की तैयारी के लिए दिया था।

तब से प्रो० डान ऐक्मो और बीस वैज्ञानिकों का ग्रूप एक से बढ़कर एक खतरनाक विनाशक तबाह कारी हथियारों यन्त्रों किरणों का अविष्कार कर रहे थे।

एक वर्ष का समय पूरा होने में अब सिर्फ चन्द दिन ही रह गए थे।

▬ ▬

सुपर क्वीन अपने महल के एक कमरे में आराम कुर्सी पर अधलेटी अवस्था में पड़ी हुई थी…उसके हाथों में ग्रह की सबसे नशीली शराब से भरा हुआ जाम था।

वह धीरे-धीरे शराब की चुस्कियां ले रही थी और सोच रही थी कि आक्रमण की शुरुआत किस ग्रह से की जाए।

विचारों में गुम सुपर क्वीन का ध्यान उस समय भंग हुआ जब कमरे में लगे यन्त्र पर उसके पर्सनल गार्ड शामुन की आवाज उभरी।'

'क्वीन···प्रो० मिनोर आपसे मिलना चाहते हैं···।'

'अन्दर भेज दो।'

अगले ही पल कमरे का दरवाजा खुला और एक अधेड़ व्यक्ति ने अन्दर कदम रखा।

वह प्रो० मिनोर था···करीब पहुंचकर उसने क्वीन का अभिवादन किया और सिर झुकाकर खड़ा हो गया।

'खड़े क्यों हो मिनोर बैठो···।' सुपर क्वीन ने सामने रखी कुर्सी की ओर इशारा करते हुए कहा।

प्रो० मिनोर खामोशी से कुर्सी पर बैठ गया। उसकी हालत देखकर ऐसा लगता था जैसे कोई मासूम बच्चा अपने जालिम बाप के सामने बैठा हो।'

'कहो क्या कहना चाहते हो···।' सुपर क्वीन ने अपना खाली हो चुका गिलास फिर से भरते हुए कहा।

'क्वीन···मैंने अदृश्य बादलों का अविष्कार किया है।' वह आदर के साथ बोला—'मैं चाहता हूं आप उन बादलों का कारनामा अपनी आंखों से देखें और मुझे आज्ञा दें ताकि मैं उन बादलों के समूह को ब्रह्माण्ड में छोड़ सकूं।'

'तुमने जिन अदृश्य बादलों का आविष्कार किया है क्या उनमें कोई खास बात है—?' सुपर क्वीन ने उसकी आंखों में झांकते हुए पूछा।

सुपर क्वीन की आंखों से निकलने वाली सर्द तरंगों ने प्रो० मिनोर के शरीर में झुर-झुरी-सी दौड़ा दी।

'क्वीन मैं अपने मुंह से अपनी तारीफ नहीं करना चाहता।' वह सिर झुका कर बोला—'लेकिन इतना जरूर कहना चाहता हूं कि जब आप ब्रह्माण्ड पर आक्रमण करेंगी तब मेरे अदृश्य बादल आपका प्रमुख हथियार होंगे···ब्रह्माण्ड में तबाही मचा देंगे मेरे अदृश्य बादल।'

'अच्छा ऐसी बात है···।' सुपर क्वीन के होंठों पर जहरीली

मुस्कराहट उभर आई—'मैं आज और अभी तुम्हारे अदृश्य बादलों का कारनामा देखूंगी…।' इतना कह कर वह उठ खड़ी हुई।

अगले ही पल वह कोने में रखे टी० वी० के पास पहुंची और उसे चालू कर दिया।

टी० वी० स्क्रीन पर फौरन प्रो० डान ऐक्मों की सूरत उभर आई।

'क्या हुक्म है सुपर क्वीन…?' कमरे में डान ऐक्मों की आवाज उभरी।

'प्रो० मिनोर अपने नए आविष्कार का मेरे सामने प्रदर्शन करना चाहते हैं।' सुपर क्वीन प्रो० मिनोर पर नजर डालती हुई बोली—'मैं चाहती हूं कि तुम, हमारे कमाण्डर जरूल बंडूला और सभी बड़े वैज्ञानिक इस प्रदर्शन को देखें…तुम सबको एक घण्टे के अन्दर कन्ट्रोल रूम में जमा कर लो।'

'ओ० के० सुपर क्वीन–।' डान ऐक्मो की आवाज उभरी। उसी के साथ स्क्रीन पर से उसका चेहरा गायब हो गया।

सुपर क्वीन ने टी० वी. सेट बन्द किया और पलट कर प्रो. मिनोर से बोली—'जाओ प्रो. जाकर अपने आविष्कार के प्रदर्शन की तैयारी करो—एक घन्टे बाद हम सब तुम्हारे आविष्कार का चमत्कार देखेंगे।'

मिनोर ने सिर झुकाकर उसका अभिवादन किया और कमरे से बाहर निकल गया।

▭▭

कन्ट्रोल रूम में मौजूद सभी लोगों की निगाहें सामने लगी विशाल स्क्रीन पर जमी हुई थीं।

बीच में अपनी शाही कुर्सी पर सुपर क्वीन मौजूद थी।

उसकी दाहिनी ओर क्रोटन ग्रह की सेना का कमाण्डर जबरल बैठा हुआ था…बाईं ओर प्रो. ऐक्मो बैठा था।

उन तीनों के पीछे कुर्सियों की एक लाइन थी जिस पर ग्रह के उन्नीस बड़े वैज्ञानिक बैठे थे।

स्क्रीन पर उस समय प्रो. मिनोर की प्रयोगशाला नजर आ रही थी।

सभी के दिलों में अजीब-सी बेचैनी थी—सब प्रो. मिनोर के

आविष्कार को देखने के लिए बेताब थे।

इन्तजार की घड़ियां आखिर खत्म हो गईं—स्क्रीन पर प्रो. मिनोर नजर आने लगा।

'सुपर क्वीन और मेरे हम पेशा साथियों—।' कन्ट्रोल रूम में प्रो. मिनोर की आवाज गूंजी—'मैं आपको बता दूं कि मेरा यह अविष्कार दुनिया का सबसे खतरनाक हथियार है···इस हथियार की काट बनाना असम्भव तो नहीं मुश्किल जरूर है—मैं जानता हूं कि आप सब लोग मेरे अविष्कार का चमत्कार देखने के लिए बहुत बेचैन होंगे—अब मैं आप लोगों का ज्यादा समय नहीं लूंगा अब देखिए मेरा आविष्कार—।' इसी के साथ स्क्रीन पर से प्रो. मिनोर गायब हो गया।'

स्क्रीन पर विशाल तोप जैसा यन्त्र नजर आने लगा।

उस यन्त्र में दस-दस फुट लम्बे पतले-पतले बारह पाइप लगे हुए थे।

'अब मैं कमरे की फौलादी छत हटाने जा रहा हूं।' कन्ट्रोल रूम में मिनोर का स्वर उभरा।

और फिर सबने यन्त्र के ऊपर नजर आने वाली छत को एक ओर सरकते देखा।

'अब देखिए इस यन्त्र का कमाल—।' मिनोर की आवाज उभरी।

यन्त्र में लगे पाइपों से रंग बिरंगी गैसें निकलकर वायु मण्डल में घुलने लगीं।

दस मिनट तक लगातार उन पाइपों से लगातार गैसें निकलती रही फिर पाइपों ने गैसों को उगलना बन्द कर दिया।

दस मिनट और गुजर गए।

अचानक कन्ट्रोल रूम में मौजूद सभी लोग बुरी तरह चौंक पड़े।

अभी कुछ पल पहले उन्हें दूर-दूर तक नीला आकाश नजर आ रहा था वहीं अब नीले आकाश पर स्याह काले बादलों का एक टुकड़ा नजर आने लगा था।

मैंने इन बादलों को अदृश्य इसलिए नहीं किया है ताकि आप इसे आसानी से देख सकें। कन्ट्रोल रूम में मिनोर की आवाज उभरी—'अब देखिए उन स्याह काले बादलों का कमाल।'

अगले ही पल वह सब आश्चर्य चकित होकर उछल पड़ा।

दिन के समय भी क्रोटन ग्रह पर अन्धेरा छाने लगा।

सब लोग स्क्रीन पर साफ देख रहे थे कि सूरज से निकलने वाली प्रकाश की किरणों को आकाश पर छाए स्याह काले बादल अपने अन्दर इस तरह सोख रहे थे जिस तरह सोखता स्याही को सोख लेता है।

'वाह···।' एकाएक सुपर क्वीन के मुंह से निकल पड़ा—।' तुम्हारे अविष्कार का जवाब नहीं।'

'थैंक्यू सुपर क्वीन···।' मिनोर खुश होकर बोला···।

'अब जरा यह भी तो बताओ कि तुम्हारे इस अविष्कार का इस्तेमाल हथियार के रूप में किस तरह किया जा सकता है···।

'बताने में मजा नहीं आएगा सुपर क्वीन···।' मिनोर की आवाज आई···' आप खुद अपनी आंखों से देखें···।'

उसके बाद मिनोर स्क्रीन पर एक छोटे से डेस बोर्ड पर झुका हुआ नजर आया···उसके दोनों हाथ डेस बोर्ड पर लगे बटनों लट्टुओं पर थिरक रहा था···।

उसके बाद स्क्रीन पर एक बड़ा सा पिन्ड नजर आने लगा···।

'यह पिन्ड जो आप लोग स्क्रीन पर देख रहे हैं···।' मिनोर की आवाज उभरी —'यह एक अवारा पिन्ड है जो हमारे ग्रह से लाख किलोमीटर दूर है अब आप लोग इस अवारा पिन्ड का अन्जाम देखिये।'

और फिर सबने देखा···स्याह काले बादलों से एक चमकदार रेखा निकली और तीव्रगति से उस पिन्ड की ओर बढ़ने लगी···।

कुछ मिनट के बाद उन लोगों ने उस अवारा पिन्ड के छोटे-छोटे टुकड़े अन्तरिक्ष में तैरते देखे···।

कन्ट्रोल रूम तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।

'मेरा ख्याल है अब सुपर क्वीन समझ गई होगी कि मेरे अविष्कार का इस्तेमाल हथियार के रूप में किस तरह किया जाएगा···।' कन्ट्रोल रूम में मिनोर आवाज उभरी···।

'हम तुमसे बहुत खुश हैं मिनोर···।' सुपर क्वीन बोली···' तुमने इनाम के काबिल काम किया है···हम सबसे पहले जिस

ग्रह पर विजय प्राप्त करेंगे उसकी कमांड हम तुम्हें सौंप देंगे···।

'थैंक्यू सुपर क्वीन···।' मिनोर की आवाज से लग रहा था कि वह बहुत खुश है···।'

उसी के साथ स्क्रीन पर सन्नाटा छा गया···।

'आप सब लोग भी जाइए···।' डान ऐक्मो अपनी कुर्सी से उठकर बोला···' जाकर आक्रमण की तैयारियों में जुट जाइए··· ठीक पांच दिन बाद हम सुपर क्वीन की कमान्ड में अन्तरिक्ष में आक्रमण करने निकल पड़ेंगे···।

सब लोग अपनी सीट से उठ खड़े हुए···सबने सुपर क्वीन का अभिवादन किया और एक-एक करके कन्ट्रोल रूम से बाहर निकलने लगे···।

▭ ▭

रेस्ट रूम में बैठकर एक घंटे का समय फौलादी सिंह ने कितनी बेचैनी से गुजारा था यह उसका दिल ही जानता था···।

एक घंटा पूरा होते ही वह फिर कन्ट्रोल रूम में जा पहुंचा।

'क्या पता चला अंकल···। उसने डाक्टर जान के गम्भीर परेशान चेहरे पर नजर डालते हुए पूछा···।

'फौलाद···।' कुछ देर खामोश रहने के बाद डाक्टर जान बोले···' हमारी पृथ्वी ही नहीं बल्कि पूरे अन्तरिक्ष के ऊपर एक भयानक खतरा मंडारा रहा है···।

'मैं कुछ समझा नहीं अंकल···।' फौलादी सिंह आश्चर्य से उनका चेहरा देखने लगा···।

'समझ तो मैं भी कुछ नहीं पाया हूं···।' डाक्टर जान बोले ··· लेकिन अभी एक घंटा मैंने यंत्रों के साथ माथा पच्ची की है उनके बाद मैं यह बात दावे के साथ कह सकता हूं कि अन्तरिक्ष में इस पृथ्वी पर एक भूचाल-सा आने वाला है···।

फौलादी सिंह को समझ में कुछ नहीं आया···हां वह इतना जरूर समझ गया कि उसकी प्यारी पृथ्वी खतरे में पड़ गई है···।

और फौलादी सिंह के रहते पृथ्वी पर कोई खतरा आए यह हो नहीं सकता था···।

फौलादी सिंह कुछ कहने ही वाला था कि कन्ट्रोल रूम में लगा शक्तिशाली ट्रांसमीटर स्पार्क करने लगा···।

नम्बर दस ट्रांसमीटर पास खड़ा था। उसने हेड फोन कानों तक चढ़ाया और ट्रांसमीटर चालू कर दिया···।

'डाक्टर जान की प्रयोगशाला से मैं रोबो इन्चार्ज नम्बर टेन बोल रहा हूं···आप कौन हैं···।'

'मैं अमरिकन अन्तरिक्ष विज्ञान प्रयोगशाला नासा का इन्चार्ज प्रो० साइमन बोल रहा हूं···।' ट्रांसमीटर पर आवाज उभरी···' डाक्टर जान से फौरन मेरी बात कराओ···।

'ओ०के० सर मैं अभी मास्टर से आपकी बात कराता हूं···।' इतना कहकर नम्बर दस ने हेड फोन उतारकर ट्रांसमीटर के पास रख दिया और पलटकर डाक्टर जान से बोला···' मास्टर प्रो० साइमन आप से बात करना चाहते हैं···।'

डाक्टर जान फौरन ट्रांसमीटर की ओर झपटे···फौलादी सिंह भी उनके पीछे लपका···।

'यस प्रो० साइमन मैं डाक्टर जान बोल रहा हूं···।'हेड फोन कानों पर चढ़ाते हुए वह बोले···।'

'डाक्टर जान···।' ट्रांसमीटर प्रो० साइमन की आवाज उभरी···।' संसार में छाए अन्धेर के सम्बन्ध में हम एक मीटिंग बुला रहे हैं···इस मीटिंग में दुनिया के लगभग सभी बड़े वैज्ञानिक (जिनका सम्बन्ध अन्तरिक्ष विज्ञान से है) भाग ले रहे हैं···हम चाहते हैं कि आप भी इसमें हिस्सा लें···।'

'पृथ्वी पर बहुत बड़ा खतरा मंडरा रहा है मि० साइमन···इसलिए मैं आपकी बात टालूंगा नहीं···मीटिंग का टाइम और स्थान बताइए मैं हाजिर हो जाऊंगा···।'

'स्थान है न्यूयार्क नासा की प्रयोगशाला···और टाइम है सात-आठ बजे···।'

'ठीक है मैं पहुंच जाऊंगा···। डाक्टर जान ने हेड फोन उतारकर रखा और ट्रांसमीटर बन्द कर दिया···।

'अंकल मैं भी आपके साथ चलूं···। पास खड़े फौलादी सिंह ने पूछा ···।'

'नहीं।' डा.जान सिर हिलाते हुए बोले, 'तुम्हारे वहां जाने से कोई फायदा नहीं होगा···तुम सफर की तैयारी करो···हो सकता है आज रात किसी समय तुम्हें अन्तरिक्ष में रवाना होना पड़े···।'

'ठीक है अंकल···।'

'नम्बर दस···।'

'यस मास्टर···। नम्बर दस जल्दी से बोला···।

'फोटान यान की लास्ट चेकिंग आरम्भ कर दो···फौलादी उसी पर अन्तरिक्ष की यात्रा करेगा···।' डाक्टर जान ने कहा···।

'ओ०के० मास्टर···।'

अब तुम लोग जाओ—मीटिंग में जाने से पहले मैं अन्तरिक्ष में नूरज को तलाश करने की कोशिश करता हूं।'

फौलादी सिंह और नम्बर दस सिर झुका कर कन्ट्रोल रूम बाहर निकल गए।

कन्ट्रोल रूम का दरवाजा बन्द हो गया।

अमरिकन घड़ियों के अनुसार रात के आठ बजने में पांच मिनट बाकी थे।

उसी समय डाक्टर जान का पर्सनल यान न्यूयार्क में नासा प्रयोग शाला की छत पर उतरा।

छत पर तीन छोटे-छोटे यान और भी खड़े थे—डाक्टर जान उन तीनों यानों को अच्छी तरह पहचानते थे।

उनमें से एक यान ईरानी वैज्ञानिक प्रो. जमीर का था।

दूसरा यान रूस के महान वैज्ञानिक प्रो. कोजनाक का था और तीसरा यान फ्रांस के महान वैज्ञानिक प्रो. फ्रांसिस का था।

छत पर डाक्टर जान का स्वागत करने के लिए प्रो. साइमन प्रयोग शाला के अधिकारियों के साथ मौजूद थे।

यान से उतर कर डाक्टर जान ने प्रो. साइमन से हाथ मिलाया और फिर उनके साथ चल दिए।

कुछ देर बाद प्रो. साइमन डाक्टर जान को लेकर एक विशाल हाल में पहुंचे।

हाल में तकरीबन पैंतीस-चालीस वैज्ञानिक मौजूद थे वह सब डाक्टर जान को देखकर उठ खड़े हुए।

डाक्टर जान के गम्भीर चेहरे पर हल्की-सी मुस्कराहट उभर आई।

उन्होंने हाथ के इशारे से सबको बैठने के लिए कहा और खुद भी एक खाली सीट पर बैठ गए।

सामने एक स्टेज बना था···जिसके ऊपर एक कुर्सी पड़ी हुई थी।

उस कुर्सी पर रूस का महान बुजुर्ग वैज्ञानिक प्रो० क्रेजनाफ बैठा हुआ था।

प्रो. क्रेजनाफ चूंकि उम्र में सब वैज्ञानिकों से बड़ा था—और अन्तरिक्ष के बारे में उसके पास जानकारी भी बहुत थी इसी लिए उसे मीटिंग का अध्यक्ष बनाया गया था।

जिन-जिन लोगों को मीटिंग में आना था वह सब आ चुके थे, इसलिए हाल का दरवाजा बन्द कर दिया गया।

प्रो. क्रेजनाफ अपनी कुर्सी से उठकर माइक के पास पहुंचा।

प्रो. क्रेजनाफ ने खंखार कर गला साफ किया और हाल में बैठे सभी वैज्ञानिकों पर एक नजर डाल कर बोले—'आप सभी अपने-अपने देश के महान वैज्ञानिक हैं···अन्तरिक्ष के सम्बन्ध मे सभी के पास अच्छी जानकारी है इसलिए आप सभी लोग अच्छी तरह जानते हैं कि अन्तरिक्ष में जो सूरज चमक रहा है उसका हमारे जीवन में कितना महत्व है—सूरज पर किसी एक देश किसी एक ग्रह का हक नहीं है—वह सब के लिए चमकता है सब को प्रकाश देता है—हमारे जीवन में सूरज का प्रकाश बहुत अधिक महत्व रखता है —आप सब अच्छी तरह जानते हैं कि अगर सूरज का प्रकाश पृथ्वी पर आना बन्द हो जाए तो प्रलय आ जाएगी। सूरज का प्रकाश हमारी जिन्दगी का एक बहुत बड़ा हिस्सा है। बिना उस प्रकाश के हम ज्यादा दिन जिन्दा नहीं रह सकते। यह पृथ्वी और उस पर रहने वाले प्राणियों की जिन्दगी खतरे में पड़ गई है। सूरज की किरणें पृथ्वी तक नहीं पहुंच पा रही हैं—पृथ्वी के हर भाग में कोने-कोने में अन्धेरा छाया हुआ है। हम सब यहां यह जानने के लिए जमा हुए हैं कि वो कौन सा कारण है जिसके कारण सूरज का प्रकाश पृथ्वी तक नहीं पहुंच पा रहा है—हम यहां कोई ऐसा उपाय तलाश करेंगे जिससे सूरज का प्रकाश फिर से पृथ्वी तक पहुंचने लगे —और वह काम हमें बहुत जल्द करना होगा —क्योंकि हमारे पास समय ज्यादा नहीं है।' इतना कहकर वह वापस अपनी कुर्सी पर आ बैठे।

चाइनीज वैज्ञानिक प्रो. हुवांग शु अपनी सीट से उठकर स्टेज पर पहुंचा और आंखें मिचमिचा कर बोला—'मैंने अपनी प्रयोग शाला में जो अध्ययन किया है उसके अनुसार मैं दावे से कह सकता हूं कि सूरज ठंडा पड़ चुका है उसका अन्त हो गया है

'''अब उसका प्रकाश हमें कभी नहीं मिलेगा—इसलिए अब हमें प्रकाश के लिए कृत्रिम सूरज का निर्माण करना होगा।'

प्रो. हुवांग शू की बात सुनकर सभी के होंठों पर मुस्कराहट आ गई—क्योंकि उसकी बात बिल्कुल गलत थी—लगभग सभी वैज्ञानिकों ने अपने देश के प्रयोगशाला में लगे रेडियो टेलिस्कोप द्वारा सूरज से निकलने वाली तरंगों को बहुत हल्के संकेत कैच किए हैं—जिससे यह पता चलता है कि सूरज अभी भी अन्तरिक्ष में मौजूद है और पहले ही की तरह गर्म है।

एक के बाद एक देश का वैज्ञानिक स्टेज पर आकर अपने विचार बताता, उपाय बताता और वापस अपनी सीट पर चला जाता।

सबसे अन्त में डाक्टर जान की बारी आई।

'साथियो'''।' डाक्टर जान स्टेज पर पहुंचकर बोले—'मैंने अपनी प्रयोगशाला में यन्त्रों पर मिलने वाले संकेतों से जो हिसाब निकाला है उसके अनुसार पृथ्वी पर मंडराने वाला खतरा प्राकृतिक नहीं है बल्कि यह खतरा इन्सानी दिमाग द्वारा पैदा किया गया है।'

'क्या आप यह कहना चाहते हैं कि सूरज का प्रकाश किसी इन्सान के कारण पृथ्वी पर नहीं पहुंच रहा है'''डाक्टर जान'''?' प्रोफेसर साइमन आश्चर्य से बोले।

'जी हां'''।' डाक्टर जान की आवाज में दृढ़ता थी।

'लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है। प्रोफेसर क्रेजनाफ बोले—'इन्सान सूरज के प्रकाश को अपने कब्जे में कर ले यह असम्भव है।'

'आप बुजुर्ग होकर बच्चों जैसी बातें कर रहे हैं कामरेड क्रेजनाफ—।' डाक्टर जान बोले—'आप अच्छी तरह जानते हैं कि विज्ञान के इस युग में कुछ भी असम्भव नहीं है।'

'यह तो ठीक है डाक्टर जान''।' प्रोफेसर फ्रांसिस ने कहा—'लेकिन अभी तक पृथ्वी का कोई भी देश विज्ञान में इतनी तरक्की नहीं कर सका है कि वह सूरज के प्रकाश को पृथ्वी पर पहुंचने से रोक सके—और फिर उससे उसे भी तो नुकसान होगा—।'

'आप यह क्यों भूल रहे हैं प्रोफेसर फ्रांसिस कि अब यह बात

साबित हो चुकी है कि इस विशाल ब्रह्माण्ड में हजारों लाखों ऐसे ग्रह हैं जहां प्राणियों का अस्तित्व है—और कुछ ग्रह तो ऐसे हैं जहां पर इस पृथ्वी के सबसे महान प्राणी मनुष्य से भी अधिक बुद्धिमान जीव मौजूद हैं। उनका विज्ञान पृथ्वी के विज्ञान से कहीं आगे है···।'

डाक्टर जान के इस तर्क ने सभी को खामोश कर दिया—काफी देर तक यह खामोशी छाई रही। फिर उस खामोशी को प्रोफेसर साइमन ने भंग किया—।

'हमें आपकी बात बिल्कुल सही लगती है डाक्टर जान··· लेकिन सवाल यह उठता है कि वह कौन-सी ऐसी चीज है जिससे किसी अन्य लोक के प्राणी सूरज की किरणों को पृथ्वी पर आने से रोक रहे हैं और हम उस चीज को सूरज के सामने से कैसे—किस तरह हटा सकते हैं—।'

'वह जो कोई भी चीज है वह अदृश्य है—।' डाक्टर जान ने कहा—'इसलिए हम यहां बैठे-बैठे उस चीज के बारे में कोई सही अन्दाजा नहीं लगा सकते···इसके लिए हमें अन्तरिक्ष की यात्रा करनी होगी—उस चीज के करीब पहुंचना होगा जो सूरज के प्रकाश को पृथ्वी पर आने से रोक रही है।'

उसके बाद बहस शुरू हुई सफर के ऊपर···।

काफी देर के बाद यह तय पाया गया कि तीन यान अन्तरिक्ष में जाएंगे···।

उनमें एक यान रूस का होगा···दूसरा अमरीका का—और तीसरा यान ईरानी वैज्ञानिक प्रो० जमीर का होगा।

इन तीनों यानों को चौबीस घंटे के बाद रवाना हो जाना था···।

डाक्टर जान ने सबको बता दिया था कि वह अपना तीव्रगति वाला फोटान यान आज ही अन्तरिक्ष में भेज रहे हैं···उन्होंने सब को यह जानकारी भी दे दी थी कि उस यान में अनेक बार पृथ्वी को भयानक खतरों से बचाने वाला फौलादी सिंह भी जा रहा है···।

डाक्टर जान के फोटान यान में फौलादी सिंह सफर करेगा—इस खबर ने सभी लोगों के चेहरों पर खुशी की लहर दौड़ा दी थी···।

फौलादी सिंह के बारे में लगभग सभी जानते थे।
कुछ देर बाद मीटिंग समाप्त हो गई।
सभी वैज्ञानिक अपने-अपने देशों को लौटने लगे।

रात का अन्तिम पहर था।
डाक्टर जान की अण्डरग्राउण्ड प्रयोगशाला में एक विस्फोट हुआ और फोटान यान प्रयोगशाला की सीमा से निकलकर वायुमण्डल में प्रवेश कर गया।
कुछ मिनटों बाद यान वायुमंडल पार करके अन्तरिक्ष में प्रविष्ट हो गया।
डाक्टर जान प्रयोगशाला के कन्ट्रोल रूम में बैठे स्क्रीन पर यान को देख रहे थे—यान के अन्दर एक ऐसा कैमरा भी फिट था जिससे वह एक निश्चित दूरी तक यान के अन्दर का दृश्य भी देख सकते थे।
उन्होंने ट्रांसमीटर चालू कर दिया।
ट्रांसमीटर पर कुछ देर शूं ''शूं'''शूं की आवाज उभरती रही फिर गायब हो गई।
ट्रांसमीटर की छोटी सी स्क्रीन पर फौलादी सिंह नजर आने लगा—उसके कन्धे पर लम्बू बैठा हुआ था।
डाक्टर जान के होंठों पर प्यारी सी मुस्कराहट उभर आई।
'हैलो फौलाद क्या तुम मेरी आवाज सुन रहे हो।' उन्होंने पूछा।
'यस अंकल।' ट्रांसमीटर स्क्रीन पर लम्बू बोलता हुआ नजर आया, 'हम आपकी आवाज भी सुन रहे हैं और स्क्रीन पर आपको देख भी रहे हैं।'
'क्या हाल है—लम्बू कोई परेशानी तो नहीं—यान ठीक चल रहा है न—किसी यन्त्र कलपुर्जे में कोई गड़बड़ी तो नहीं है।'
'नहीं अंकल।' इस बार फौलादी सिंह बोला, 'कोई परेशानी नहीं—सब कुछ ठीक चल रहा है—यान की सब मशीनें—कल-पुर्जे बिल्कुल ठीक काम कर रहे हैं।'
'गुड—टैम्प्रेचर की क्या रिपोर्ट है?'
'नार्मल है।'
'ओ० के०—अगर कोई खास बात हो तो खबर करना—

अब मैं ट्रान्समीटर बन्द कर रहा हूं।' इतना कहकर डाक्टर जान ने ट्रान्समीटर बन्द कर दिया।

उसके बाद उन्होंने कन्ट्रोल सीट छोड़ दी—वह पास खड़े नम्बर दस से बोले—

'मैं आराम करने जा रहा हूं। तुम यान पर नजर रखो। जरा भी गड़बड़ महसूस हो मुझे फौरन बुला लेना।'

'ओ० के० मास्टर।' नम्बर दस ने सिर झुकाकर कहा।

डाक्टर जान कन्ट्रोल रूम से बाहर निकल गए।

उनके जाते ही नम्बर दस ने कन्ट्रोल सीट सम्हाल ली और स्क्रीन पर नजर आ रहे फोटान यान को ध्यान से देखने लगा।

▭ ▭

फोटान यान एक निश्चित गति से अन्तरिक्ष में आगे बढ़ता जा रहा था।

फौलादी सिंह यान को कन्ट्रोल कर रहा था—लम्बू उसके कंधे पर विराजमान था।

यान के सभी यन्त्र सही तरह काम कर रहे थे। बाहर लगे अत्यन्त शक्तिशाली कैमरों के कारण अन्तरिक्ष में लाखों किलो-मीटर दूर का दृश्य यान की स्क्रीन पर देख रहा था।

यान दो लाख किमी० प्रति सेकेण्ड की रफ्तार से आगे बढ़ता जा रहा था।

इस तीव्र रफ्तार से चलने के कारण यान का टेम्प्रेचर अत्यन्त अधिक हो गया था इसलिए फौलादी सिंह ने यान के चारों ओर कोल्ड किरणें फैला दीं—जिससे यान का टेम्प्रेचर एक बार फिर नार्मल हो गया। वरना यान किसी अंगारे की तरह जल कर राख हो जाता।

'डियर लम्बू।' फौलादी सिंह स्क्रीन पर नजर जमाये हुए बोला—'हमें एक लम्बी यात्रा करनी है—इसलिए हमारे लिए खाना पीना और सोना बहुत जरूरी है। सोना तो सबसे ज्यादा जरूरी है क्योंकि पता नहीं आगे हमें सोने को मिले न मिले।'

'साफ-साफ कहो तुम कहना क्या चाहते हो।' लम्बू उसके सिर पर तबला बजाता हुआ बोला—'इतना लम्बा भाषण देने की क्या जरूरत है।'

'मैं यह कह रहा था कि गर्मा-गर्म काफी के बारे में तुम्हारी

क्या राय है।'

लम्बू के होंठों पर मुस्कराहट उभर आई—वह समझ गया कि फौलादी सिंह काफी पीना चाहता है—फिर भी वह अन्जान बनकर बोला—'काफी एक बिल्कुल घटिया तरल पदार्थ है··· इन्सान को इसका इस्तेमाल हरगिज नहीं करना चाहिए—क्योंकि वह काफी नुकसानदायक होती है।'

लम्बू का इतना लम्बा-चौड़ा भाषण सुनकर फौलादी सिंह को गुस्सा आ गया। उसने एक झटके से लम्बू को कन्धे पर से उतारा और पीछे की ओर उछाल दिया।

लम्बू फौलादी सिंह से ऐसे ही किसी काम की आशा कर रहा था इसलिए वह सावधान था।

जैसे ही फौलादी सिंह ने उसे पीछे उछाला—उसने अपने शरीर का बेलेंस साधा और कन्ट्रोल रूम में लगे किसी यन्त्र से टकराकर चोट खाने के बजाय वह सही सलामत पैरों के बल फर्श पर उतर गया।

वह जहां पर उतरा था वहीं यान के दूसरे भाग में जाने के लिए दरवाजा था। उसने फुर्ती से दरवाजा खोला और अन्दर प्रविष्ट हो गया।

दरवाजा खुलने बन्द होने की आवाज सुनकर फौलादी सिंह के होंठों पर मुस्कराहट उभर आई। वह जानता था कि लम्बू काफी लेकर ही लौटेगा।

यान के दूसरे भाग में भी एक छोटा सा कमरा था। उसमें खाने-पीने का सामान रखा था। सोने का भी इन्तजाम था, इसके अलावा उस कमरे में कई छोटे बड़े यन्त्र भी लगे हुए थे।

फौलादी सिंह का विचार बिल्कुल सही था। दो मिनट भी नहीं गुजरे होंगे कि लम्बू वहां गर्म-गर्म काफी लेकर हाजिर हो गया।

'डियर फौलाद काफी हाजिर है।' लम्बू उसके सामने काफी का मग रखता हुआ बड़ी अदा से बोला—'काफी के कई फायदे हैं—वह नींद को दूर भगाती है···थकान को दूर करती है, इन्सान को इसका इस्तेमाल जरूर करना चाहिए।'

'जीते रहो, शादी हो जाये, दो-चार दर्जन बच्चों के अब्बा बनो।' फौलादी सिंह ने बूढ़ी औरतों की तरह उसे ढेर सारी

दोआएं दे डालीं।

उसके बाद दोनों काफी की चुस्कियां लेने लगे।

दोनों जिस सफर पर जा रहे थे—वहां उनकी मौत भी हो सकती थी। फिर भी उनके चेहरों पर शिकन का एक निशान भी न था।

दोनों मौत के मुंह में भी कहकहे लगाने की हिम्मत रखते थे।

▭▭

पांच दिन पूरे होते ही क्रोटन की एक विशाल सेना सुपर क्वीन की कमाण्ड में विजय अभियान पर निकल पड़ी।

अन्तरिक्ष में एक हंगामा मच गया—कोहराम बरपा हो गया।

एक के बाद एक ग्रहों पर क्रोटन की सेना अपना कब्जा जमा कर आगे बढ़ती जा रही थी।

लाशों के ढेर लगते जा रहे थे।

अन्तरिक्ष इन्सानी चीखों से कांप रहा था।

सुपर क्वीन बड़ी खूबी से अपनी सेना का संचालन कर रही थी—सेना का कमाण्डर जनरल भी साथ था।

सेना की एक विशेष टुकड़ी सबसे आगे चल रही थी—उसका काम था, आस-पास के ग्रहों पर सुपर क्वीन का सन्देश पहुंचाना।

सुपर क्वीन का सन्देश था।

क्रोटन अन्तरिक्ष का सबसे शक्तिशाली ग्रह है और सुपर क्वीन उसकी रानी…तुम्हें आदेश दिया जाता है कि क्रोटन से अपना सम्बन्ध जोड़कर तुम लोग भी सुपर क्वीन को अपनी रानी मान लो…अगर तुमने ऐसा न किया तो तबाह बर्बाद कर दिए जाओगे अन्तरिक्ष में तुम्हारे ग्रह का नामो निशान मिटा दिया जाएगा।

यह था सुपर क्वीन का सन्देश—जिसे सेना की विशेष टुकड़ी दूसरे ग्रहों के राजाओं को पढ़ा रही थी।

शुरू के एक दो ग्रहों ने इस संदेश पर कोई खास ध्यान नहीं दिया—न ही सुपर क्वीन को वह अपनी रानी मानने के लिए तैयार हुए।

इसका फल भी उन्हें भोगना पड़ा।

सुपर क्वीन के आदेश पर प्रो० मिनोर के अदृश्य बादलों से निकलने वाली विनाश कारी सूरज की किरणों ने उस ग्रह के परखचे उड़ा दिए।

तीन-चार ग्रहों का जब यही अन्जाम हुआ तो दूसरे ग्रह वाले हथियार हो गए।

सुपर क्वीन का सन्देश मिलते ही वह लोग सुपर क्वीन को अपनी रानी मान लेते और उसके क्रोध का शिकार होने से बच जाते।

सुपर क्वीन सेना के किसी बड़े अधिकारी को सुपर ग्रह की राज गद्दी पर बैठाकर सेना के साथ आगे बढ़ जाती।

कई दिन तक यह सिलसिला जारी रहा।

पांच करोड़ किलो मीटर की दूरी तक कोई भी ऐसा ग्रह नहीं बचा जिस पर सुपर क्वीन ने विजय न प्राप्त की हो।

इस बीच कई शक्तिशाली ग्रहों ने सुपर क्वीन की सेना का जमकर मुकाबला भी किया लेकिन अन्त में प्रो० मिनोर के अदृश्य बादलों से निकलने वाली विनाश कारी सूरज की किरणों के आगे उन्हें घुटने टेक देने पड़े।

सुपर क्वीन अपने इस विजय अभियान को आगे भी जारी रखना चाहती थी—लेकिन उसकी यह हसरत पूरी न हो सकी।

प्रो· मिनोर अदृश्य बादलों को अपनी प्रयोगशाला से ही कन्ट्रोल कर रहा था।

उसने ट्रांसमीटर पर सुपर क्वीन को सूचित कर दिया कि अभी अदृश्य बादलों की रेंज सिर्फ इतनी ही है इससे आगे वह अदृश्य बादलों को कन्ट्रोल नहीं कर सकता।

मजबूरन सुपर क्वीन को वापस लौटना पड़ा।

▭▭

फोटान यान ७६ प्रकाश वर्ष की यात्रा पूरी कर चुका था।

इस बीच यान पर कई छोटे-बड़े खतरे आए थे लेकिन फौलादी सिंह और लम्बू ने बड़ी बुद्धिमानी से उन खतरों का सामना किया और यान पर एक खरोंच भी न आने दी।

एक बार तो यान अन्तरिक्ष में मंडरा रहे एक आवारा पिण्ड से टकराकर नष्ट हो जाता—अगर यान का संचालन फौलादी सिंह जैसे एक्सपर्ट आदमी के हाथ में उसका कन्ट्रोल न होता

ती।

फोटान यान का सफर जारी था—अचानक तभी यान में लगे अत्यन्त शक्तिशाली सुपर कम्प्यूटर और अति आधुनिक यन्त्र संकेत देने लगे।

फौलादी सिंह ने बड़ी फुर्ती से उन संकेतों को नोट किया फिर उनका कैल्कुलेशन निकालने लगा।

संकेतों से जो कैल्कुलेशन निकला उसे देखकर फौलादी सिंह आश्चर्यचकित रह गया।

'क्या बात है फौलाद—।' उसके चेहरे पर बदलते हुए भावों को देख कर लम्बू ने पूछा।

'हमारी मंजिल करीब आ गई है लम्बू।'

'क्या मतलब—।' लम्बू ने आश्चर्य से पूछा।

'यान में लगे सुपर कम्प्यूटर और यन्त्रों ने जो संकेत दिए हैं उनके अनुसार तीन करोड़ किलोमीटर आगे एक ग्रह है जिसके आकाश पर अदृश्य बादल छाए हुए हैं—वही अदृश्य बादल सूरज से निकलने वाली सारी किरणों को अपने अन्दर सोख रहे हैं।'

'इसका मतलब है—उन बादलों के कारण हमारी पृथ्वी पर अन्धेरा छाया हुआ है।' लम्बू बोला।

'हां—।' फौलादी सिंह सिर हिला कर बोला—'तुम टी. सी. किरणों वाले कैमरे चालू कर दो—ताकि हम उस ग्रह के करीब पहुंचने पर उन अदृश्य बादलों को देख सकें और उसके फोटो ग्राफ उतार सकें।'

'ठीक है मैं अभी चालू करता हूं।' लम्बू उछल कर एक मशीन के पास पहुंचा—और फिर उस मशीन के डेश बोर्ड पर लगे बटनों से खेलने लगा।

▭ ▭

प्रो. डान ऐक्सों कन्ट्रोल सीट पर बैठा स्क्रीन पर नजर रख रहा था।

जब से सुपर क्वीन ने अन्तरिक्ष के दूसरे ग्रहों पर विजय प्राप्त की थी तब से उसका काम और बढ़ गया था।

उसका ज्यादा तर समय स्क्रीन के सामने ही गुजरता था।

आज भी वह स्क्रीन पर बैठा ग्रहों की निगरानी कर रहा था।

अचानक उसने एक छोटे से बिन्दु को सरकते हुए देखा—डान

ऐकमों की अनुभवी आंखें सिकुड़ती चली गईं।

अनुभवी ऐकमों उस सरकते हुए बिन्दु को देखकर समझ गया कि वह कोई यान है।

यान की दिशा कोटन ग्रह की ओर ही थी इसलिए उसके दिल में शंका उठी···शंका के समाधान के लिए उसने हाई पावर टेलिस्कोपि दुरबीन और शक्तिशाली अलफा कैमरे चालू कर दिया।

फौरन स्क्रीन पर एक धमाका हुआ और नजर आने वाला बिन्दु यान में बदल गया।

अब स्क्रीन पर यान इतना बड़ा और साफ नजर आ रहा जैसे वह आंखों के सामने हो।

यान की बनावट देखकर वह आश्चर्य चकित रह गया उसे मालूम था कि अन्तरिक्ष में दूर-दूर तक कोई भी ग्रह इस प्रकार का यान नहीं बनाता।

उसने अल्फा कैमरे से सम्बन्धित स्क्रीन चालू कर दी।

स्क्रीन पर यान के अन्दर का दृश्य उभरने लगा।

फौलादी सिंह और लम्बू को स्क्रीन पर देख कर डान ऐकमों बुरी तरह उछल पड़ा।

'पृथ्वी के दो इन्सान हमारे ग्रह की ओर क्यों आ रहे हैं---।' वह बड़बड़ाया।

डान ऐकमों बहुत बड़ा वैज्ञानिक था—उसके पास पृथ्वी के बारे में बहुत जानकारी थी---उसे मालूम था कि पृथ्वी के प्राणी बहुत खतरनाक होते हैं।

फौलादी सिंह के बारे में उसने बहुत कुछ सुन रखा था—उसने सुना था कि फौलादी सिंह नाम का प्राणी पृथ्वी का सबसे बहादुर खतरनाक और फुर्तीला इन्सान है···उसने अन्तरिक्ष के कई शक्तिशाली ग्रहों को तबाह कर डाला है।

अन्तरिक्ष के कई ग्रह उसे अपना दोस्त भी मानते हैं।

ऐकमों ने सिर्फ फौलादी सिंह के बारे में सुन ही रखा था उसकी सूरत से वाकिफ नहीं था इसलिए वह उसे स्क्रीन पर देखकर भी नहीं पहचान पाया।

उसने कुछ सोचकर ट्रांसमीटर चालू किया और यान से सम्पर्क जोड़ने की कोशिश करने लगा।

पांच मिनट तक लगातार कोशिश करने के बाद आखिर उसे

सफलता मिल ही गई।

ट्रांसमीटर पर ऐसी आवाज उभरने लगी—जैसे हजारों मक्खियां भिन-भिना रही हों।

कुछ पलों बाद वैसी आवाजें आनी बन्द हो गईं।

ऐक्मों स्क्रीन पर नजर डालता हुआ बोला—'हैलो—हैलो—मैं क्रोटन ग्रह से प्रो. डान ऐक्मों बोल रहा हूं—तुम दोनों कौन हो और हमारे ग्रह की ओर क्यों आ रहे हो।'

'हैलो—हैलो—।' कुछ पलों बाद ट्रांसमीटर पर फौलादी सिंह की आवाज उभरी—'हम पृथ्वी के प्राणी हैं—मेरा नाम फौलादी सिंह है और मेरे साथी का नाम नन्बू है।'

फौलादी सिंह का नाम सुनते ही डान ऐक्मों के शरीर में झुरझुरी सी दौड़ती चली गई—माथे पर पसीना छलक आया।

उसने रुमाल निकाल कर पसीना पोंछा और बोला—'फौलादी सिंह तुम हमारे ग्रह पर क्यों आ रहे हो।'

ट्रांसमीटर पर कुछ देर खामोशी छाई रही ··फिर फौलादी सिंह की गुर्राती हुई आवाज उभरी—'तुम्हारे ग्रह के ऊपर अदृश्य बादल छाए हुए हैं। वह बादल सूरज की किरणों को अपने अन्दर सोख रहे हैं—इसलिए पृथ्वी तक सूरज की किरणें नहीं पहुंच पा रही हैं। पृथ्वी पर लगातार कई दिनों से अंधेरा छाया हुआ है—तुम लोगों ने अदृश्य सूरज की किरणें सोखने वाले बादलों का निर्माण करके पृथ्वी के लिए खतरा पैदा कर दिया है। फौरन उन बादलों को सूरज के सामने से हटाओ या फिर उन्हें नष्ट करो।

'ऐसा नहीं हो सकता फौलादी सिंह।' डान ऐक्मों गम्भीरता से बोला—'वो बादल सूरज के सामने से नहीं हटाए जा सकते वह तो हमारे ग्रह का सबसे बड़ा हथियार है—इसी की सहायता से तो हम पूरे अन्तरिक्ष पर विजय प्राप्त करेंगे—कुछ दिनों बाद तुम्हारी पृथ्वी पर ही हमारी हुकूमत कायम हो जाएगी।

'हां—हां—हां—।' फौलादी सिंह का जोरदार कहकहा उभरा—'पृथ्वी पर हुकूमत—ऐसा सपना अन्तरिक्ष के कई शक्तिशाली व्यक्ति देख चुके हैं···लेकिन जानते हो उनका क्या अन्जाम हुआ—मैंने उन सब को दुनिया की सबसे बुरी मौत मारा है।'

'उनकी बात अलग है···।' डान ऐक्मों दृढ़ता से बोला—

तुमने उन्हें जरूर मार डाला है लेकिन तुम हमारे ग्रह की ओर आंख उठाकर भी नहीं देख सकते, अगर तुमने ऐसी गलती की तो तुम्हें बहुत बुरा अन्जाम भुगतना पड़ेगा। हो सकता है तुम कभी पृथ्वी पर न लौट सको तुम्हारी और तुम्हारे साथी की आत्माएं हमेशा अन्तरिक्ष में भटकती रहेंगी।'

'ओह—तो तुम्हें अपनी शक्ति पर बहुत नाज है क्यों—।' फौलादी सिंह की आवाज में व्यंग झलक रहा था।

'हां...।' डान ऐक्मो मुस्करा कर गर्व से बोला—'तभी तो पांच करोड़ किलो मीटर तक जितने भी ग्रह हैं सब पर हमारा अधिकार है।'

'तो ठीक है फिर—।' फौलादी सिंह की आवाज में चैलेंज था—।अपनी बर्बादी का इन्तजाम कर लो—मैं आ रहा हूं... तुम्हारी तबाही का सामान लेकर।'

'हा—हा—हा...।' डान ऐक्मो ने खौफनाक कहकहा लगाया—'तुम्हारा यान ग्रह के पास भी नहीं पहुंच पाएगा और हम उसे नष्ट कर देंगे।'

'यह तो समय बताएगा कि कौन किसे नष्ट करता है।'

मारे गुस्से के डान ऐक्मो ने ट्रांसमीटर बन्द कर दिया।

अगले ही पल वह सुपर क्वीन को फौलादी सिंह के आने की जानकारी दे रहा था।

'अब आपकी क्या आज्ञा है...।' सारी बात बताकर डान ऐक्मो ने पूछा।

'तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैं दुश्मन को जिन्दा देखना पसन्द नहीं करती...और फिर फौलादी सिंह तो हमारे ग्रह के लिए बहुत बड़ा खतरा साबित हो सकता है—उसे फौरन खत्म कर दो...।'

'ओ. के. सुपर क्वीन—अगर आप चाहें तो कन्ट्रोल रूम में आकर फौलादी सिंह की मौत का शानदार नजारा अपनी आंखों से देख सकती हैं।'

'ठीक है मैं आ रही हूं।'

डान ऐक्मो ने ट्रांसमीटर कम टी. वी. सेट बन्द कर दिया।

अगले ही पल वह फ्लाइंग एक्वायड को फौलादी सिंह के बारे में सूचना दे रहा था।

डान ऐकमों को चैलेंज देने के बाद फौलादी सिंह मुकाबले की तैयारी करने लगा।

लम्बू स्क्रीन पर नजरें जमाए बैठा हुआ था। उसकी नजरें फोटन ग्रह पर लगी हुई थी।

एकाएक उसने फोटन ग्रह से एक अजीबो गरीब यान निकलते हुए देखा—उस यान का आकार बिल्कुल सिगार जैसा था।

यान ग्रह से निकल कर तीव्र गति से उनकी ओर बढ़ने लगा।

'सावधान फौलाद—।' लम्बू चिल्लाया—'दुश्मन का एक यान आ रहा है।'

'चिन्ता मत करो—।' फौलादी सिंह ने डैश बोर्ड में लगे एक बटन को पुश करते हुए कहा।

उस बटन का सम्बन्ध सेफ किरणों से था···बटन पुश करते ही पूरे यान को सेफ किरणों ने कवर कर लिया।

दोनों यान तीव्र गति से एक दूसरे की ओर बढ़ रहे थे—उनके बीच की दूरी गुजरते हुए हर पल के साथ घटती जा रही थी।

एक पल वह भी आया जब उन दोनों के बीच की दूरी सिर्फ १०० किलो मीटर रह गई।

'मरने के लिए तैयार हो जाओ फौलादी सिंह।'

फोटान यान के ट्रांसमीटर पर एक गर्जदार आवाज उभरी।

'हा—हा—हा—।' फौलादी सिंह ने एक जोरदार कहकहा लगाया—'कुत्तों, फौलादी सिंह अजय है अमर है उसे कोई नहीं मार सकता···अपनी खैरियत चाहते हो तो वापस लौट जाओ··· और जाकर अपने ग्रह की सनकी रानी सुपर क्वीन को यह सलाह दो कि वह सूरज के सामने से अदृश्य बादलों का टुकड़ा हटा ले—वरना न तुम रहोगे—न तुम्हारा ग्रह रहेगा और न अदृश्य बादल रहेंगे।'

'तुमने हमारी सुपर क्वीन की शान में गुस्ताखी की है···इसलिए तुम्हें अब और कुछ बोलने की मोहलत नहीं दी जा सकती लो सम्भालो हमारा वार।'

और फिर अगले ही पल उस सिगार जैसे यान से लाल रंग की किरणें निकल कर फौलादी सिंह के यान की ओर झपटी।

फौलादी सिंह सावधान था। उसने फौरन डैश बोर्ड में लगा

एक सफेद बटन पुश कर दिया।

फोटान यान से सफेद रंग की किरणें निकलकर लाल किरणों की ओर झपटी···जैसे ही दोनों का आपस में टकराव हुआ, एक जोरदार धमाका हुआ और अन्तरिक्ष में फुल झड़ियां सी छूटने लगी।

-हां—हा—हा—।' फौलादी सिंह ने कह-कहा लगाया—'देख लिया अपनी लाल किरणों का अन्जाम।'

यान चालक ने फौलादी सिंह की बात का कोई जवाब नहीं दिया···बल्कि दूसरा वार कर दिया।

यान से एक छोटा-सा राकेट निकलकर फोटान यान की ओर बाज की तरह झपटा।

फौलादी सिंह ने फौरन एक बटन पुश कर दिया।

यान के अगले भाग से एक किरण निकलकर राकेट की ओर लपकी। कुछ पलों बाद राकेट भी रास्ते में ही नष्ट हो गया।

सिगार जैसे यान के चालक को शायद गुस्सा आ गया था तभी तो उसने ताबड-तोड़ हमले शुरू कर दिए।

पर वाह रे फौलादी सिंह···बड़ी फुर्ती से वह उन हमलों को बेकार करने लगा।

इसी बीच उसे एक यान को नष्ट करने का बड़ा ही शानदार मौका मिला। मौके को बेकार करना फौलादी सिंह ने सीखा नहीं था।

उसने यान का निशाना लेकर डेश बोर्ड में लगा एक बटन पुश कर दिया।

काले रंग की किरणें उस सिगार जैसे यान की ओर लपकी।

चालक ने यान को बचाने की बहुत कोशिश की लेकिन किस्मत ने उसका साथ नहीं दिया।

एक धमाका हुआ और यान के छोटे-छोटे टुकड़े अन्तरिक्ष में छितर गए।

'वह मारा···।' लम्बू चिल्लाकर उछला और फौलादी सिंह के कन्धे पर सवार होकर उसके गाल चूमने लगा।

'अरे···अरे···यह क्या कर रहा है लम्बू के बच्चे।' फौलादी सिंह लम्बू की इस हरकत से बुरी तरह बौखला गया।

'कुछ नहीं जरा मुंह का जायका बदल रहा था—।' लम्बू

कन्धे से उछलता हुआ बोला।

अभी कुछ ही पल गुजरे होंगे—कि फौलादी सिंह ने स्क्रीन पर कोरन ग्रह से एक के बाद एक पांच अंडाकार यान निकलते देखे।

लम्बू ने भी उन यानों को देख लिया था उसके चेहरे पर गम्भीरता छा गई—वह एक यन्त्र के सामने जा बैठा और उसे चालू कर दिया।

अगले ही पल यन्त्र की स्क्रीन पर पांचों अण्डाकार यान नजर आने लगे।

लम्बू की उंगलियां डेश बोर्ड में लगे बटनों पर थिरकने लगीं।

जल्द ही उसने एक यान को निशाने पर लेकर हमला कर दिया।

निशाना खाली जाने का कोई सवाल ही नहीं उठता था।

एक धमाके के साथ उस यान के हजारों टुकड़े अन्तरिक्ष में बिखर गए।

'जियो लम्बू प्यारे···।' फौलादी सिंह ने नारा लगाया—'अब जरा मेरा कमाल भी देखो।'

उसने भी एक यान को निशाने पर ले रखा था···अगले ही पल उस यान का भी वही हाल हुआ जो पहले वाले का हुआ था।

कोरन ग्रह के यान चालक बुरी तरह बौखला गए···उन्होंने तो सपने में भी नहीं सोचा था कि फौलादी सिंह इतनी दूरी से उनके दो यानों को नष्ट कर देगा।

घबरा कर उन तीनों ने भी फौलादी सिंह के यान पर हमला किया।

उनके हमले कुछ इस तरह हो रहे थे कि बचाव का सिर्फ एक रास्ता फौलादी सिंह को नजर आया···वह बड़ी फुर्ती से यान चक्कर दिलाने लगा।

कभी वह यान को ऊपर ले जाता तो कभी नीचे···कभी एक दाएं घुमा देता तो कभी बाएं।

अण्डाकार यानों का एक भी हमला सफल नहीं हो पा रहा

लेकिन इस बीच लम्बू मौका पाकर···एक यान को नष्ट करने में सफल हो गया था।

अगले दस मिनट में फौलादी सिंह और लम्बू ने अपने अचूक निशानों से बाकी बचे दोनों अण्डाकार यान भी नष्ट कर डाले।

फौलादी सिंह ने फुर्ती से ट्रांसमीटर पर क्रोटन ग्रह से सम्पर्क किया और व्यंग से बोला—'सुपर क्वीन क्रोटन ग्रह पर जितने भी यान हों सबको एक साथ भेज दो इस बार।'

'चिन्ता मत करो फौलादी सिंह…।' ट्रांसमीटर पर सुपर क्वीन का बर्फ से भी अधिक ठन्डा स्वर उभरा—ऐसा लगता था जैसे कोई चोट खाई नागिन फुंकार रही हो—'इस बार यान नहीं सूरज की विनाश कारी किरण आ रही है तुम्हारी ओर—अपने यान को बचा सकते हो तो बचा लो—।' इसी के साथ ट्रांसमीटर पर खामोशी छा गई।

फौलादी सिंह ने फुर्ती से ट्रांसमीटर बन्द किया और अदृश्य बादलों पर नजरें गड़ा दीं।

क्रोटन ग्रह पर छाए अदृश्य बादल…फोटान यान में लगी टी वी. स्क्रीन पर साफ नजर आ रहे थे।

○ ○

सुपर क्वीन इस समय सचमुच चोट खाई नागिन नजर आ रही थी।

उसका दूध जैसा सफेद चेहरा अंगारे की तरह लाल हो रहा था—ऐसा लगता था उसके शरीर का सारा खून चेहरे और आंखों में सिमट आया हो।

ट्रांसमीटर कम टी. वी. पर प्रो. मिनोर नजर आ रहा था।

सुपर क्वीन उससे कह रही थी।

'प्रो. अगर तुम्हारा निशाना चूक गया तो तुम अपना अन्जाम सोच लेना—मुझे तुम्हारा गर्म-गर्म खून पीने में कोई दुख न होगा।'

प्रो. मिनोर का कांपता हुआ शरीर स्क्रीन पर साफ नजर आ रहा था—कुछ देर बाद ट्रांसमीटर पर उसका लड़खड़ाता हुआ स्वर उभरा।

'मेरा निशाना नहीं चूकेगा सुपर क्वीन फौलादी सिंह और उसका यान में से कोई नहीं बचेगा, सूरज की विनाश कारी किरण उन्हें जला कर राख कर देंगी।'

'तो ठीक है फिर…तुम शुरू हो जाओ…ताकि मैं जल्द

जल्द अपनी आंखों से पृथ्वी के सबसे शक्तिशाली व्यक्ति का अन्त अपनी आंखों से देख सकूं।' इतना कहकर उसने जोर से दो बार ताली बजाई…।

फौरन उसका एक पर्सनल गार्ड…शीशे का एक बड़ा सा जार लिए उसके सामने हाजिर हो गया।

जार के अन्दर क्रोटन ग्रह पर पाया जाने वाला सबसे खतरनाक सांप बन्द था…। उसका नाम किड स्नेक था।

सुपर क्वीन के इशारे पर गार्ड ने जार उसके सामने रखे स्टूल पर रख दिया और वहां से चला गया…।

उसके जाते ही सुपर क्वीन ने जार खोला और दो फुट लम्बे हरे रंग के अत्यन्त जहरीले सांप किड स्नेक का फन पकड़कर बाहर निकाल लिया…।

किड स्नेक क्रोधित हो उठा, उसने जोर से फुंफकार मारी और सुपर क्वीन की कलाई पर अपनी पूंछ लपेट कर उसे तोड़ने की कोशिश करने लगा।

लेकिन उसे सुपर क्वीन की कलाई तोड़ने में सफलता न मिली।

सुपर क्वीन की आंखों में एक अजीब-सी चमक नजर आ रही थी। वह किड स्नेक का फन अपने मुंह के सामने ले आई।

किड स्नेक की आंखों में आंखें डालकर उसने अपनी जुबान बाहर निकाल दी।

किड स्नेक बुरी तरह क्रोधित था—जुबान को सामने देखते ही—उसका फन तेजी से जुबान की ओर झपटा।

अगले ही पल उसने जुबान की नोक पर डस लिया…ढेर सारा जहर जुबान की नोक पर उगल दिया।

सुपर क्वीन की लाल-लाल जुबान किसी पेड़ के पत्ते की तरह हरी नजर आने लगी।

सुपर क्वीन के मुंह से एक आनन्ददायक सिसकारी निकली और उसने आंखें बन्द करके कुर्सी की पुश्त से टेक लगा ली।

किड स्नेक से डसवा कर वह कितनी खुश थी। यह बात उसके चेहरे से साफ झलक रही थी।

पांच मिनट तक वह उसी तरह आंखें बन्द किए टेक लगाए, बैठी रही। फिर उसने आंखें खोलकर किंग स्नेक को देखा··· वह अब भी फुंकारें मार रहा था।

'मजा आ गया डियर—!' सुपर क्वीन ने खुश हो कर कहा।

इधर सुपर क्वीन खुश हो रही थी—उधर उसके पास बैठा डान ऐग्रो बार-बार रुमाल से अपना पसीना पोंछ रहा था।

उसने सुपर क्वीन जैसी खतरनाक औरत आज तक नहीं देखी थी।

▭ ▭

प्रोफेसर मिनोर का दिल अब भी कांप रहा था। उसके कानों में सुपर क्वीन की आवाज गूंज रही थी।

'अगर तुम्हारा निशाना चूक गया—तो मुझे तुम्हारा गर्म-गर्म खून पीने में कोई दुख न होगा।'

'न···नहीं—नहीं—।' वह बड़बड़ाया—'मेरा निशाना नहीं चूकेगा।'

और फिर धीरे-धीरे उसकी घबराहट दूर होने लगी—उसने अपने अन्दर विश्वास पैदा किया और स्क्रीन पर नजरें जमा दीं।

स्क्रीन पर क्रोटन ग्रह की ओर बढ़ता हुआ फौलादी सिंह का यान नजर आ रहा था।

'तुम्हारी मौत मेरी जिन्दगी है फौलादी सिंह—इसलिए तुम्हें मरना ही होगा।' वह बुदबुदाया।

उसके बाद वह बादलों को कन्ट्रोल करने वाली मशीन के बटनों से खेलने लगा।

जल्द ही उसने फौलादी सिंह के यान को निशाने पर ले लिया।

अगले ही पल उसने डेश बोर्ड में लगा डेथ बल्ब पुश कर दिया···!

स्क्रीन पर अदृश्य बादलों से सूरज की विनाशकारी किरणें तूफानी रफ्तार से ही निकल कर फौलादी सिंह के यान की ओर झपटीं।

प्रोफेसर मिनोर ने साफ देखा कि फौलादी सिंह का यान किरणों की लपेट में आने से बचने की कोशिश कर रहा है।

लेकिन किरणों का घेरा इतना बड़ा था और उनकी रफ्तार इतनी तेज थी कि यान बच न सका।

जैसे ही किरणें यान से टकरायीं--एक कान फाड़ देने वाला धमाका हुआ और यान के हजारों लाखों टुकड़े अन्तरिक्ष में बिखर गए।

यान नष्ट होने से एक क्षण पहले प्रोफेसर मिनोर ने फौलादी सिंह और लम्बू को यान से बाहर अन्तरिक्ष में छलांग लगाते हुए देख चुका था।

वह फौरन ही उन दोनों को निशाने पर लेने की कोशिश करने लगा।

वह ऐश बटन पुश करने ही जा रहा था कि ट्रांसमीटर स्क्रीन रोशन हो गई—उसका हाथ रुक गया, वह समझ गया कि गुपर क्वीन कोई नया आदेश देना चाहती है।

उसका विचार बिल्कुल सही था—स्क्रीन पर गुपर क्वीन की सूरत उभर आई थी।

'प्रोफेसर—फौलादी सिंह और लम्बू को मारना मत। गुपर क्वीन की आवाज उभरी—वह बहुत खुश नजर आ रही थी —मैं उन दोनों को जिन्दा अपने सामने देखना चाहती हूं—उनका ताजा-ताजा गर्म-गर्म खून पीकर मैं देखना चाहती हूं कि पृथ्वी के प्राणियों का खून कैसा होता है।'

'जैसी आपकी आज्ञा गुपर क्वीन।' प्रोफेसर मिनोर ने सिर झुका कर कहा—हालांकि उसे फौलादी सिंह और लम्बू के जिन्दा बच जाने का बहुत अफसोस था। वह इसे अपनी हार समझ रहा था।

उसने मशीन बन्द कर दी…क्योंकि अब उसे फौलादी सिंह और लम्बू से कुछ लेना-देना नहीं था—वह जानता था कि गुपर क्वीन ने उन दोनों को पकड़ कर लाने के लिए यान रवाना कर दिए होंगे।

वह बिल्कुल ठीक सोच रहा था। फौलादी सिंह और लम्बू को पकड़ने के लिए दो यान ग्रह से चल चुके थे।

फौलादी सिंह और लम्बू बाल-बाल बचे थे।

यान नष्ट होने से एक क्षण पहले फौलादी सिंह को इस बात का एहसास हो गया था कि विनाशकारी किरणों से यान बच नहीं पाएगा।

बस फिर क्या था। उसने बिना एक पल बरबाद किए यान का दरवाजा खोला और फुर्ती से लम्बू को पकड़ कर अन्तरिक्ष में छलांग लगा दी।

यान के हजारों टुकड़े होकर इधर-उधर छिटके---किस्मत ने यहां पर भी उनका साथ दिया---कोई भी टुकड़ा उन्हें न लगा।

कुछ पलों बाद फौलादी सिंह और लम्बू ने अपनी बेल्ट में लगा काला बटन पुश किया---उस बटन का सम्बन्ध शरीर में फिर छोटे किन्तु अत्यन्त शक्तिशाली जेट इन्जन से था---बटन पुश करते ही दोनों के शरीर में फिर जेट इन्जन स्टार्ट हो गया और वह किसी परिन्दों की तरह ही क्रोटन ग्रह की ओर बढ़ने लगे।

फौलादी सिंह और लम्बू के शरीर पर काले रंग की बहुत चुस्त पोशाक थी···कमर पर बेल्ट लगी हुई थी।

वह बेल्टें साधारण न थीं। उन पर रंग बिरंगे बटन लगे हुए थे···उन बेल्टों को हथियारों का भण्डार कहा जाय तो गलत न होगा।

फौलादी सिंह और लम्बू तेजी से ग्रह की ओर बढ़ते जा रहे थे।

उन्हें इस बात की पूरी उम्मीद थी कि उन्हें समाप्त करने के लिए एक बार फिर सूरज की विनाशकारी किरणें छोड़ी जाएंगी···लेकिन ऐसा न हुआ।

क्रोटन ग्रह से दो यानों को निकल कर अपनी ओर बढ़ते देख कर लम्बू बोला।

'लगता है कि सुपर क्वीन ने हमें लेने के लिए सवारी भेजी है।'

'लम्बू हम इनसे मुकाबला नहीं करेंगे।' फौलादी सिंह ने कुछ सोचकर कहा।

'क्या मतलब ?' लम्बू ने उसे घूरकर देखा—'तुम यह कहना चाहते हो कि हम जानबूझ कर अपने आपको उनके हवाले कर दें।

'हां, मैं यही कहना चाहता हूं।' फौलादी सिंह मुस्करा कर बोला—'क्रोटन ग्रह हमारी मंजिल है। किसी न किसी तरह हमें वहां पहुंचना ही है चाहे उड़कर पहुंचे—चाहे उनके यान पर सवार होकर।'

'बात तो तुम्हारी ठीक है।' लम्बू ने सिर को हिलाते हुए कहा।

फौलादी सिंह के दिमाग में क्या था यह वह अच्छी तरह समझ चुका था।

यान करीब आ गए।

दोनों ने बटन दबाकर जेट इन्जन बन्द कर दिए। ताकि उन लोगों को उनके उड़ने का रहस्य मालूम न हो सके।

एक यान से जाल फेंक कर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

दोनों ने कोई विरोध नहीं किया।

यान उन्हें लेकर क्रोटन ग्रह की ओर वापस लौट पड़े।

सुपर क्वीन अपनी शाही कुर्सी पर बैठी फौलादी सिंह को घूर रही थी।

उसकी आंखों में इस समय ऐसी चमक थी जैसी चीते की आंखों में उस समय होती है जब वह अपना मन पसन्द शिकार देख लेता है।

'हा…हा…हा…!' कुछ देर घूरने के बाद सुपर क्वीन ने मुंह उठा कर छत फाड़ देने वाला कहकहा लगाया।

'फौलादी सिंह…पृथ्वी का सबसे शक्तिशाली बहादुर फुर्तीला इन्सान…इस समय किसी बेबस चूहे की तरह मेरे सामने खड़ा है।'

'आप इस बन्दे को भूल रही हैं सुपर रानी साहिबा।' लम्बू ने फौरन अपनी टांग अड़ाई।

'नहीं लम्बू मैं तुम्हें भूली नहीं हूं।' सुपर क्वीन मुस्करा कर बोली—'पहले जरा फौलादी सिंह से बातें कर लूं फिर तुमसे भी प्यार भरी बातें करूंगी।'

उसकी बात सुन कर लम्बू इस तरह शर्माया जैसे कोई नई दुल्हन शर्माती है।

उसकी इस हरकत पर वहां मौजूद सभी लोग हंस पड़े।

उस समय वहां पर···सुपर क्वीन के अलावा···डान ऐक्सो सेना का कमान्डर जनरल और प्रोफेसर मिनोर भी मौजूद थे।

उन चारों के अलावा वहां पर सेना के कुछ अधिकारी भी फौलादी सिंह और लम्बू को देखने के लिए वहां पर आए हुए थे।

'बोलो फौलादी सिंह तुम्हारे साथ क्या सलूक किया जाए?' सुपर क्वीन उसकी आंखों में आंखें डालकर बोली—'मार दिया जाए या छोड़ दिया जाए।'

फौलादी सिंह के होंटों पर व्यंग भरी मुस्कराहट उभर आई—'तुम अभी बच्ची हो सुपर क्वीन···मुझे मारने का सपना बहुत लोगों ने देखा, लेकिन हुआ क्या मैं आज भी तुम्हारे सामने जिन्दा हूं···और वह लोग ऊपर वाले के पास पहुंच चुके हैं···यही अंजाम तुम्हारा भी होगा।'

'तुम्हारा खून पीने में सचमुच मुझे आनन्द आ जाएगा।' सुपर क्वीन उसे ललचाई हुई नजरों से देखती हुई बोली।

'हा···हा···हा!' फौलादी सिंह ने एक बार फिर कहकहा लगाया—'मेरा खून बहुत बदहजमी करता है सुपर क्वीन···अगर तुमने पिया भी तो पेट फाड़ कर बाहर आ जाएगा।'

'काफी दिलेर हो यह तो साबित हो चुका है।' कहकर उसने जोर से दो बार ताली बजाई।

फौरन सुपर क्वीन के दोनों पर्सनल गार्ड उसके सामने पहुंच गए।

'इसे ब्लड मशीन के पास ले जाओ।' वह फौलादी सिंह की ओर इशारा करती हुई बोली—'दस मिनट के अन्दर मुझे इसका ताजा-ताजा खून चाहिए।'

दोनों गार्डों ने बड़ी फुर्ती से फौलादी सिंह को खोला और उसे लेकर वहां से चल दिए।

उनके हाथों में छोटी-छोटी अजीब तरह की खतरनाक गनें थीं।

गनों की नाल देखकर फौलादी सिंह समझ गया कि उनसे

किरणें निकलती हैं।

उनके बताए हुए रास्तों पर फौलादी सिंह चुपचाप चलता रहा···चाहता तो उसी समय उन दोनों को समाप्त कर सकता था, लेकिन उसने ऐसा किया नहीं—वह ब्लड मशीन तक पहुंचना चाहता था।

जल्द ही उसकी पूरी शर्त हो गई—गार्ड उसे एक रूम में लेकर पहुंचे।

रूम में एक अजीब तरह की मशीन रखी हुई थी—मशीन काफी बड़ी थी।

एक गार्ड फौलादी सिंह को कवर किए रहा और दूसरा ब्लड मशीन स्टार्ट करने लगा।

फौलादी सिंह के लिए यही मौका था—उसने बड़ी फुर्ती से ब्लड मशीन स्टार्ट कर रहे गार्ड पर छलांग लगा दी।

जिस गार्ड ने उसे कवर कर रखा था उसकी कुछ समझ में ही नहीं आया कि आखिर यह हो क्या गया।

जब तक वह सम्हल पाता—तब तक फौलादी सिंह उसके साथी की गन छीनकर उसे अपने निशाने पर ले चुका था।

'अपनी गन फेंक दो···।' फौलादी सिंह उस गार्ड से बोला—'अगर तुमने गन चलाई तो तुम्हारा साथी ही मारा जाएगा। मेरा कुछ नहीं बिगड़ेगा।'

बात सच भी थी···फौलादी सिंह ने उस गार्ड को अपने सामने कर रखा था।

मजबूरन उस गार्ड को गन फेंकनी पड़ी।

'अब तुम दोनों मेरे कुछ सवालों का जवाब दो।' फौलादी सिंह बोला।

'हम तुम्हारे किसी सवाल का जवाब नहीं देंगे।' सामने खड़ा गार्ड गुर्राकर बोला।

फौलादी सिंह ने गन की नाल उसकी ओर घुमाई और ट्रिगर दबा दिया।

शूं···शूं···शूं···। की आवाज के साथ गन की नाल से लाल रंग की किरणें निकलकर उस गार्ड के शरीर से टकरायीं।

अगले ही पल गार्ड का शरीर मोम की तरह पिघलने लगा।

'अपने साथी का अन्जाम देख लो···। फौलादी सिंह गुर्राया—'अगर तुमने भी मेरे सवालों का जवाब नहीं दिया तो तुम्हारा भी यही अन्जाम होगा।'

'प···पूछो···पूछो···मैं तुम्हारे हर सवाल का जवाब दूंगा।' गार्ड हकलाकर बोला।

'ब्लड मशीन किस तरह काम करती है—?' उसने पूछा।

'मशीन स्टार्ट करने के बाद—जिस इन्सान का खून निकालना होता है—उसके दोनों हाथों को मशीन के अन्दर कोहनी के अन्दर तक डाल कर लाल रंग का बटन पुश कर देते हैं। एक मिनट के अन्दर मशीन उस व्यक्ति का सारा खून निचोड़ लेती है। उसके बाद हरे रंग के बटन को पुश करके—किसी बर्तन में उस खून को निकाल लिया जाता है।'

'मेरी पोशाक और बेल्ट कहां रखी है—और अदृश्य बादलों को किस स्थान से कन्ट्रोल किया जाता है—?' फौलादी सिंह ने पूछा।

गार्ड कुछ हिचकिचाया। फौलादी सिंह ने लाल-लाल आंखों से उसे घूरकर देखा और उंगली ट्रिगर पर रख दी।

'नहीं—नहीं—मुझे मारना नहीं—। वह घबराकर चिल्लाया—'मैं सब कुछ बताता हूं।'

'शाबाश यह हुई न अच्छे बच्चों वाली बात—।' फौलादी-सिंह मुस्कराकर बोला—'शुरू हो जाओ फिर जल्दी से···।'

'आपकी और आपके साथी की पोशाकें और बेल्ट प्रोफेसर डान ऐक्मों के पास हैं—शायद वह उनका अपनी प्रयोगशाला में परिक्षण करेगा—अदृश्य बादलों को प्रो० मिनारे की प्रयोगशाला से कन्ट्रोल किया जाता है।'

उसके बाद फौलादी सिंह उस गार्ड से अपने मतलब की जानकारी काफी देर तक लेता रहा।

अब वह क्रीटन ग्रह के महत्वपूर्ण स्थानों जैसे की एटोमिक सेन्टर, सोर्य सेन्टर, पावर हाउस, सेना के अड्डे, शस्त्रागार—बीस बड़े वैज्ञानिकों की प्रयोगशालाओं के बारे में सब कुछ जान गया था।

अब गार्ड को जिन्दा रखने से कोई लाभ न था—इसलिए उसने ट्रिगर दबा दिया।

गार्ड का शरीर मोम की तरह पिघलने लगा।

पहले तो उसके मन में आया कि वह ब्लड मशीन को नष्ट कर डाले लेकिन फिर कुछ सोचकर उसने ऐसा नहीं किया।

फौलादी सिंह ब्लड रूम से बाहर आ गया। बाहर आते ही उसका सामना दो सैनिकों से हो गया।

सैनिक उसे पहचान कर अपनी गन सीधी कर पाते...इससे पहले ही फौलादी सिंह ने गन की नाल का रुख उनकी ओर करके ट्रिगर दबा दिया।

उनका भी वही अन्जाम हुआ। दोनों मोम की तरह पिघल गए।

उसके बाद तो फौलादी सिंह ने कन्ट्रोल रूम की ओर दौड़ लगा दी।

रास्ते में जो भी आता गन से निकलने वाली किरणें उसे मोम बना देतीं।

▭▭

प्रोफेसर ऐक्सो डान अपनी प्रयोगशाला में फौलादी सिंह की पोशाक और बेल्ट चैक कर रहा था।

अगर वह कन्ट्रोल रूम में कन्ट्रोल सीट पर होता तो फौलादी सिंह द्वारा किया जा रहा कत्लेआम उसे स्क्रीन पर नजर आ जाता।

यह बात फौलादी सिंह के लिए बहुत फायदेमंद साबित हुई थी।

उसे कन्ट्रोल रूम तक पहुंचने में कोई खास परेशानी नहीं हुई थी--ब्लड रूम से निकलकर वहां तक पहुंचने में बीस सैनिकों से उसका सामना हुआ था जिन्हें उसने बड़ी आसानी से मोम बना दिया था।

कन्ट्रोल रूम के गेट पर दो सैनिक खड़े हुए थे...उन्हें समाप्त करके फौलादी सिंह अन्दर प्रविष्ट हो गया।

कन्ट्रोल रूम के अन्दर सन्नाटा छाया हुआ था...वह समझ गया कि डान ऐक्सो अपनी प्रयोगशाला में होगा।

फौलादी सिंह कन्ट्रोल रूम के बीच में जाकर खड़ा हो गया। उसके जबड़े सख्ती से भिच गए।

अगले ही पल उसने गन का ट्रिगर अपनी ओर खींच लिया

और पंजों के बल चक्कर लगाने लगा।

वह किसी मशीनी मानव की तरह घूम रहा था और गन से निकलने वाली किरणें कन्ट्रोल रूम में लगी मशीनों और यन्त्र को मोम की तरह पिघला रही थीं।

कुछ ही देर में फौलादी सिंह ने कन्ट्रोल रूम पूरी तरह नष्ट कर डाला।

फौलादी सिंह बहुत खुश था···उसे उम्मीद नहीं थी कि वह कन्ट्रोल रूम को इतनी आसानी से तबाह कर देगा।

यह सब उसकी पोशाक और बेल्ट का कमाल था। अगर डान ऐक्मो पोशाक और बेल्ट चेक करने प्रयोगशाला न जाता तो वह कन्ट्रोल रूम में होता—तब फौलादी सिंह के सामने बहुत सी मुश्किलें आ जातीं।

अब उसे डान ऐक्मो की प्रयोगशाला को नष्ट करना था··· लेकिन उससे पहले उसे अपनी लम्बू की पोशाकें और बेल्टें हासिल करनी थीं।

कन्ट्रोल रूम के अन्दर से ही एक रास्ता प्रोफेसर डान ऐक्मो की प्रयोगशाला में जाता था।

फौलादी सिंह उसी रास्ते की ओर चल दिया।

अपनी प्रयोगशाला के अन्दर प्रोफेसर डान ऐक्मों जैसे-जैसे फौलादी सिंह की पोशाक और बेल्ट को चेक करता जा रहा था वैसे-वैसे उसकी आंखें आश्चर्य से फैलती जा रही थीं।

उसे मानना पड़ा कि जिस किसी ने भी फौलादी सिंह की पोशाक और बेल्ट का निर्माण किया होगा···निश्चित रूप से वह बहुत बड़ा वैज्ञानिक होगा।

वह अपने काम में इतना मगन था कि उसे फौलादी सिंह के अन्दर आने का पता ही नहीं चला।

फौलादी सिंह दबे पांव उसके पीछे पहुंचा और कन्धे पर हाथ रखकर धीरे से बोला—'अगर इन्हें अच्छी तरह चेक कर चुके हो तो अब मुझे वापस कर दो।'

डान ऐक्मों फौलादी सिंह की आवाज सुनकर आश्चर्य से उछल पड़ा।

'त···तुम···तुमजिन्दा हो···?' उसकी आवाज लड़खड़ा

गई।

फौलादी सिंह मुस्करा दिया—'जब तक अन्तरिक्ष में तुम जैसे लोग जिन्दा हैं तब तक मैं मर नहीं सकता···लाओ यह पोशाकें और बेल्टें मुझे दे दो।'

डान ऐक्मों कुछ हिचकिचाया।

फौलादी सिंह ने फौरन गन का रुख उसकी ओर करके ट्रिगर दबा दिया।

प्रोफेसर डान ऐक्मों ने कभी सोचा भी नहीं था कि जिन किरणों का निर्माण खुद उसने किया है वही उसकी मौत का कारण बन जाएगीं।

ऐक्मों को समाप्त करके फौलादी सिंह ने क्रोटन ग्रह के वस्त्र उतारकर अपनी पोशाक पहनी, बेल्ट लगाई—फिर लम्बू की पोशाक और बेल्ट उठाकर वह प्रयोगशाला के अन्दर तबाही मचाने लगा।

==

सुपर क्वीन गुस्से से पागल हो रही थी।

उसको गुस्सा आने के दो कारण थे एक तो उसे फौलादी सिंह का खून पीने को नहीं मिला था। दूसरे उसे फौलादी सिंह द्वारा मचाई गई तबाही की सूचना मिल चुकी थी।

सेना का कमाण्डर जनरल उसके सामने सिर झुकाये खड़ा था।

"अब खड़े-खड़े अपनी मनहूस सूरत मुझे क्यों दिखा रहे हो।' सुपर-क्वीन नागिन की तरह फुंफकारी—'जाओ ग्रह का चप्पा-चप्पा छान मारो—किसी भी तरह फौलादी सिंह को जिन्दा मेरे सामने लेकर आओ।'

'बेकार है सुपर रानी।' कुर्सी पर बंधा लम्बू मुस्करा कर बोला—'फौलादी सिंह तुम लोगों के हाथ आने वाला नहीं— जब

तक तुम्हारे सैनिक उसे ढूंढेंगे तब तक तो वह ग्रह पर तबाही मचा डालेगा।'

'मैं उसे ऐसा नहीं करने दूंगी।' सुपर क्वीन गुर्राई।

'तुम उसे रोक नहीं सकोगी।' लम्बू ने उसे ताव दिलाया।

लम्बू किसी तरह सुपर क्वीन को वहां से हटाना चाहता था ताकि वह आजाद होने की कोशिश कर सके।

आखिर उसे सफलता मिल ही गई—उसकी बातें सुन कर सुपर क्वीन बुरी तरह परेशान हो उठी।

अगले ही पल वह वहां से निकल गई।

उसके जाते ही लम्बू बन्धनों से आजाद होने की कोशिश करने लगा।

बन्धन इतने टाइट थे कि लम्बू को उनसे आसानी से छुटकारा मिलता नजर नहीं आ रहा था।

लेकिन उसका भी नाम लम्बू था। वह आसानी से हार मानने वालों में से नहीं था।

□□

सुपर क्वीन उस कमरे से निकलकर लगभग भागती हुई एक अन्य कमरे में पहुंची।

प्रोफेसर डान ऐडम्स और ग्रह के बीस बड़े वैज्ञानिकों ने उसकी सुरक्षा के लिए कई प्रकार के छोटे-छोटे यन्त्र, अनेक प्रकार के खतरनाक हथियार आदि बनाकर दिए थे।

उनमें एक सेफ्टी ड्रेस भी थी।

सुपर क्वीन उन सारी चीजों को उसी कमरे में रखती थी।

कमरे में पहुंचकर उसने सबसे पहले सेफ्टी ड्रेस पहनी फिर हथियारों और यन्त्रों को ड्रेस की जेबों में रखने लगी।

कुछ देर बाद सुपर क्वीन अपनी सुरक्षा का सारा इन्तजाम करके कमरे से बाहर आ गई। तब सेना की एक टुकड़ी भी

उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती थी।

अगले ही पल वह महल की छत पर जा पहुंची—वहां उसका स्पेशल यान खड़ा हुआ था।

सुपर क्वीन यान के अन्दर बैठ गई—अगले ही पल यान ऊपर उठने लगा।

▭ ▭

फौलादी सिंह उड़ता हुआ प्रोफेसर मिनोर की प्रयोगशाला की ओर बढ़ रहा था।

दूर से ही उसने देख लिया था कि प्रोफेसर मिनोर की प्रयोगशाला को चारों तरफ से सैनिकों ने घेर रखा है। सुरक्षा के बहुत कड़े प्रबन्ध हैं।

अभी वह प्रयोगशाला से काफी दूर था…तभी प्रयोगशाला की छत पर मौजूद एक सैनिक की नजर उस पर पड़ गई।

'फौलादी सिंह आ रहा है।' सैनिक पूरी शक्ति से चिल्लाया।

अगले ही पल चारों तरफ से फौलादी सिंह पर हमले होने लगे।

लेकिन फौलादी सिंह सुरक्षा किरणों के घेरे में था—इसलिए उस पर सैनिकों द्वारा फेंकी जा रही किरणों का असर नहीं हो रहा था।

फौलादी सिंह के हाथ में फंसी हुई गन भी किरणें उगलने लगी।

सैनिकों की संख्या धीरे-धीरे कम होने लगी।

फौलादी सिंह ने बेल्ट में लगा लाल बटन पुश कर दिया—जिसके कारण वह तेजी से नीचे उतरने लगा।

तभी सेना की एक नई टुकड़ी के साथ कमाण्डर जनरल वहां आ पहुंचा।

सैनिकों के आक्रमण में एकाएक फिर तेजी आ गई।

फौलादी सिंह के शरीर को तेज झटके लगने लगे···वह समझ गया कि उस पर जेड० एक्स किरणें फेंकी जा रही हैं।

अगर वह सुरक्षा किरणों के घेरे में न होता तो जेड एक्स किरणें उसका खेल खत्म कर देती।

वह जानता था कि सुरक्षा किरणों का घेरा ज्यादा देर तक जेड एक्स किरणों का मुकाबला नहीं कर सकेगा—इसलिए अब वह बड़ी फुर्ती से अपने आपको जेड एक्स किरणों की चपेट से बचाने लगा।

'तुम बच नहीं सकोगे फौलादी सिंह···।' कमान्डर जनरल गुर्राया—'अपने आपको हमारे हवाले कर दो।'

'हा—हा—हा···।' फौलादी सिंह ने एक जोरदार कहकहा लगाया।

'फौलादी सिंह अमर है जनरल—उसे कोई नहीं मार सकता···।' इतना कहकर उसने गन का ट्रिगर खींच लिया।

लाल किरणें तेजी से कमान्डर जनरल की ओर झपटीं।

लेकिन जनरल फुर्तीला निकला उसने एक छोटा-सा माचिस की डिबिया के आकार का यंत्र निकाल कर उसका बटन पुश कर दिया।

यन्त्र से हरे रंग की किरणें निकलने लगी—उन किरणों ने कमाण्डर की ओर बढ़ने वाली लाल किरणों को रास्ते ही में नष्ट कर दिया।

फौलादी सिंह के कदम जैसे ही धरती पर पहुंचे उसने बड़ी फुर्ती से गन के बेल्ट में लगे एक हुक में फंसाया और बेल्ट से एक शीशी निकाली···।

शीशी के अन्दर छोटे-छोटे सफेद मोती भरे थे···। कुछ मोती निकालकर उसने शीशी वापस उसी जगह रख दी जहां से निकाली

थीं।

दरअसल वह सफेद मोती—मोती नहीं अत्यन्त शक्तिशाली लेसर किरणों के बम थे।

फौलादी सिंह उन बमों को सैनिकों की ओर उछालने लगा।

धड़ाम···धड़ाम···।

बमों के कान फाड़ देने वाले धमाकों से धरती कांपने लगी।

एक बम फटता···बीसियों सैनिक मौत के मुंह में समा जाते।

कमाण्डर भी लेसर बम का शिकार हो गया—बम को आते देख उसने बचने की बहुत कोशिश की—लेकिन बम उसके पास ही आकर फटा।

बम से निकलने वाली लेसर किरणों ने उसके शरीर के चिथड़े उड़ा दिए।

जरा-सी देर में मैदान साफ हो गया—चारों तरफ लाशें ही लाशें नजर आने लगीं।

फौलादी सिंह प्रयोगशाला के गेट की ओर बढ़ने लगा।

▭▭

प्रो० मिनोर अपनी प्रयोगशाला के अन्दर बैठा बेबसी से हाथ मल रहा था।

अन्दर एक टी० वी० सेट लगा था जिस पर उसने फौलादी-सिंह द्वारा मचाए गए कत्लेआम को अपनी आंखों से देखा था।

लेकिन वह देखने के अलावा कुछ नहीं कर सका था···अब फौलादी सिंह उसे प्रयोगशाला की ओर बढ़ता नजर आ रहा था—वह चाहकर भी उसे नहीं रोक सकता था।

एक मोहावरा है चिराग तले अन्धेरा!

यह मोहावरा उसके साथ बिल्कुल सही बैठा था।

उसने जिन अदृश्य बादलों का निर्माण किया था। उनसे निकलने वाली सूरज की विनाशकारी किरणें एक किलोमीटर के क्षेत्र में मौजूद हर चीज को जलाकर राख कर देती थीं।

अगर वह उस समय फौलादी सिंह पर उन विनाशकारी किरणों का प्रयोग करता तो उसकी प्रयोगशाला भी जल कर नष्ट हो जाती।

वह बेबसी से हाथ मलता ही रहा…और फौलादी सिंह प्रयोगशाला में प्रविष्ट होकर उसके सिर पर पहुंच गया।

'क्या सोच रहे हो प्रोफेसर…?' फौलादी सिंह ने पूछा।

फौलादी सिंह टी० वी० स्क्रीन पर नजर नहीं आ रहा था इसलिए मिनोर को पता चल गया था कि वह प्रयोगशाला के अंदर आ चुका है—तभी तो वह अपने पीछे उसकी आवाज सुनकर चौंका नहीं।

'मैं तुम्हारे ही बारे में सोच रहा था—।' उसने गम्भीरता से कहा।

'मेरे बारे में सोचना बन्द कर दो प्रोफेसर—।' फौलादी सिंह गुर्राया—'पृथ्वी के बारे में सोचो—वहां अन्धेरा छाया हुआ है …जब तक तुम्हारे अदृश्य बादल सूरज के सामने से नहीं हटेंगे—तब तक वहां प्रकाश की किरणें नहीं पहुंचेंगी।'

'और वह बादल कभी नहीं हटेंगे…।' प्रोफेसर मिनोर दृढ़ता से बोला।

'बादल हटेंगे प्रोफेसर—।' फौलादी सिंह जबड़े भींच कर बोला—'अगर तुम खुद नहीं हटाओगे तो तुम्हें मार कर मैं खुद उसे हटा दूंगा।'

'प्रोफेसर मिनोर अन्दर ही अन्दर कांप उठा…लेकिन हिम्मत करके वह बोला—'मुझे मार कर भी तुम अदृश्य बादल नहीं हटा पाओगे—क्योंकि तुम उस मशीन के बारे में ए० बी० सी० भी नहीं जानते।'

फौलादी सिंह मुस्करा दिया। मिनोर की बात सच थी लेकिन अपने चेहरे से जाहिर नहीं होने दिया—'तुम शायद जानते नहीं···।' वह बोला—'पृथ्वी पर डाक्टर जान नाम का बहुत बड़ा वैज्ञानिक रहता है···तुम्हारे जैसे वैज्ञानिकों की औकात उसके सामने उसी तरह है जैसे एक मास्टर के सामने बच्चों की होती है···मैं उसी डाक्टर जान के साथ रहता हूं—तुम्हारी मशीन का सिस्टम समझने में मुझे ज्यादा देर नहीं लगेगी···।' इतना कहकर उसने गन का रुख प्रोफेसर मिनोर की ओर कर दिया।

'ठ···ठहरो ट्रिगर मत दबाना—।' प्रोफेसर मिनोर दोनों हाथ उठाकर गिड़गिड़ाया।

फौलादी सिंह की चाल कामयाब हो गई।

'तो चलो फिर···।'

प्रोफेसर मिनोर फौलादी सिंह को लेकर उस हाल की ओर चल दिया जहां बादलों को कन्ट्रोल करने वाली मशीन लगी हुई थी।

मशीन देखकर फौलादी सिंह को मानना पड़ा कि प्रोफेसर मिनोर सचमुच एक बड़ा वैज्ञानिक है।

प्रोफेसर मिनोर पूरे एक मिनट तक मशीन के डेश बोर्ड में लगे बटनों नाबों और लट्टूओं से खेलता रहा।

आकाश पर छाए अदृश्य बादल समाप्त हो गए···उसमें समाई हुई प्रकाश किरणें एक रसायनिक क्रिया द्वारा ठन्डी हो गयीं।

अगर ऐसा न होता—तो कम से कम क्रोटन ग्रह जल कर राख जरूर हो जाता।

बादल के हटते ही सूरज की किरणों ने क्रोटन ग्रह की धरती को चूमा।

फौलादी सिंह मुस्करा दिया···क्योंकि वह जानता था कि कुछ ही देर में सूरज का प्रकाश पृथ्वी तक भी पहुंच जाएगा।

'प्रो० मिनोर मरने के लिए तैयार हो जाओ···।' फौलादी-सिंह दृढ़ता से बोला—'तुम्हारी जिन्दगी पूरे संसार के लिए एक

भयानक खतरा है···चिन्ता मत करो तुम्हें मार कर मैं तुम्हारी मशीन को भी सही सलामत नहीं रहने दूंगा।'

इससे पहले कि प्रो० मिनोर कुछ कह पाता फौलादी सिंह ने ट्रिगर दबा दिया।

प्रो० को समाप्त करने के बाद—वह प्रयोगशाला की हर वस्तु को नष्ट करने लगा।

अन्त में वह प्रयोगशाला में आग लगाकर बाहर आ गया।

फौलादी सिंह मुश्किल से चालीस पचास कदम ही चल पाया होगा कि उसने अपने सिर के ऊपर एक यान को देखा।

इससे पहले कि वह सम्हल पाता···यान से निकलने वाली किरणें उसके शरीर से टकरायीं—और वह उछल कर दूर जा गिरा।

सुरक्षा किरणों ने एक बार फिर उसकी रक्षा की थी।

इससे पहले कि यान से निकलने वाली किरणें दूसरी बार उसके शरीर से टकराती···फौलादी सिंह ने बेल्ट में लगा एक बटन पुश कर दिया।

जेट इन्जन स्टार्ट हो गया और उसका शरीर तीव्र गति से ऊपर उठने लगा।

पलक झपकते ही फौलादी सिंह भी यान की तरह आकाश में मंडराने लगा।

'मैं तुम्हें जिन्दा नहीं छोडूंगी फौलादी सिंह···।' सुपर क्वीन यान के अन्दर से गूंजी—'तुमने मेरा बहुत नुकसान किया है।'

'अच्छा हुआ तुम खुद आ गयीं—वरना मुझे खुद आना पड़ता···!' फौलादी सिंह बोला।

उसके बाद तो फौलादी सिंह और सुपर क्वीन के बीच जम-कर युद्ध होने लगा।

आधे घन्टे जमकर युद्ध करने के बाद कहीं जाकर फौलादी-सिंह सुपर क्वीन के यान को नष्ट करने में सफल हो पाया।

लेकिन सुपर क्वीन बच गई···यान नष्ट होने से एक क्षण पहले उसने यान से बाहर छलांग लगा दी थी।

उसका शरीर बड़ी तेजी से नीचे गिर रहा था—इससे पहले कि उसका शरीर जमीन से टकराता फौलादी सिंह ने बाज की तरह झपट्टा मार कर उसे पकड़ लिया।

सुपर क्वीन को दबोच कर फौलादी सिंह तेजी से उसके महल की ओर उड़ने लगा।

□□

सुपर क्वीन अपने महल के एक कमरे में कुर्सी से बंधी हुई थी। इस समय उसके शरीर पर साधारण कपड़े थे। उसकी ड्रेस फौलादी सिंह उतार चुका था।

जिस समय फौलादी सिंह महल पहुंचा उस समय लम्बू अपने आपको बंधनों से आजाद करा चुका था।

आजाद होने के बाद लम्बू वहीं फौलादी सिंह की प्रतीक्षा कर रहा था—उसे मालूम था कि वह जरूर आएगा।

फौलादी सिंह के आते ही वह उछल कर उसके कन्धे पर सवार हो गया था।

फौलादी सिंह सुपर क्वीन को कुर्सी से अच्छी तरह जकड़ कर उसकी निगरानी का भार लम्बू को सौंप कर वहां से चला गया था।

एक घन्टे बाद जब वह लौटा तो उसके हाथ में शीशे का एक बहुत बड़ा जार था—उस जार में खून भरा हुआ था।

'तुम्हें खून पीने का बड़ा शौक है न—लो मैं तुम्हारे लिए खून लाया हूं...इस जार में तुम्हारे उन्नीस बड़े वैज्ञानिकों का ताजा ताजा खून है बीसवां तो मेरे हाथ से पहले ही मारा जा चुका था आखिरी बार खून पी लो क्योंकि मैं तुम्हारी ब्लड निकालने वाली मशीन नष्ट कर आया हूं।

उसके बाद फौलादी सिंह और लम्बू ने जबरदस्ती सुपर क्वीन को जार में भरा खून पिलाया।

'सुना है तुम्हें सांप का जहर बहुत पसन्द है।' फौलादी सिंह बोला—'सांप का जहर तुम पर असर नहीं करता—हमारी पृथ्वी का पोटेशियम साइनाइड नाम का एक जहर है—कहते हैं उसे जुबान पर रखते ही इन्सान की कहानी खत्म हो जाती है—हम चाहते हैं कि तुम एक बार पोटेशियम साइनाइड एक बार चख कर देखो।'

और फिर जबरदस्ती फौलादी सिंह ने पोटेशियम साइनाइड का एक कैप्सूल सुपर क्वीन के मुंह में डाल दिया।

जैसे ही सुपर क्वीन के मुंह में कैप्सूल रखा—वैसे ही पोटे-

शियम साइनाइड अपना असर दिखाने लगा—उसका चेहरा नीला पड़ने लगा।

फौलादी सिंह का इशारा पाकर लम्बू ने सुपर क्वीन के दोनों हाथ खोल दिए।

सुपर क्वीन अपना गला फाड़कर छटपटाने लगी।

'हा···हा···हा···।' फौलादी सिंह ने एक जोरदार कहकहा लगाया—'सुपर क्वीन तुम्हें दो चीज पसन्द थी खून और जहर बिना तुम्हारी आखिरी इच्छा पूछे मैंने दोनों चीजें तुम्हें दे दीं—ताकि मरने के बाद तुम्हारे दिल में कोई हसरत बाकी न रह जाए।

सुपर क्वीन का शरीर इतना जहरीला था कि पोटैशियम साइनाइड खा लेने के बाद भी वह पांच मिनट तक जिन्दा रही उसके बाद उसने दम तोड़ दिया।

जिस समय फौलादी सिंह और लम्बू बाहर निकले···उस समय उन्हें आश्चर्य चकित रह जाना पड़ा।

महल के बाहर हजारों की संख्या में सैनिक और जनता खड़ी थी।

'आपकी जालिम रानी सुपर क्वीन मर चुकी है।' फौलादी सिंह ने चिल्ला कर कहा।

'फौलादी सिंह जिन्दाबाद।'

'फौलादी सिंह जिन्दाबाद।'

नारों से क्रोटन ग्रह गूंजने लगा।

फौलादी सिंह और लम्बू समझ गए कि सुपर क्वीन के मरने से क्रोटन ग्रह की जनता बहुत खुश है।

□ □

इस तरह एक बार फिर फौलादी सिंह के कारण पृथ्वी पर तबाही आने से बच गई।

फौलादी सिंह और लम्बू क्रोटन ग्रह का एक यान लेकर पृथ्वी की ओर लेकर लौट पड़े।

रास्ते में उनकी मुलाकात—प्रो० जमीर के···अमरिकन और रूस के यानों से हुई।

फौलादी सिंह ने ट्रांसमीटर पर सब कुछ बता दिया···वह तीनों यान भी पृथ्वी की ओर वापस चल दिए।

साहस और रोमांच से भरपूर डायमण्ड 'बाल पाकेट' बुक्स में

राजीव के बाल उपन्यास

मूल्य प्रत्येक— ३.००

चाचा चौधरी और पशुमानव
मामा भांजा और जादूगर राक्षस
फौलादी सिंह और विचित्र आत्मा
ताऊजी और काल राक्षस
लम्बू मोटू और काले बादल
अण्डेराम डण्डेराम और पीपल का प्रेत
चाचा चौधरी और डाक बंगले का शैतान
मामा भांजा और तस्करों का अड्डा
चाचा चौधरी और अजीब तमाशा
राजन इकबाल और अपराधी का चैलेंज
मोटू पतलू और जंगल के देवता
चाचा भतीजा और रानी महामाया
ताऊजी और जादुई कबूतर
महाबली शाका और सैम्सन की हत्या
मोटू छोटू और पिघलता भूत
टारजन और बीहड़ की जादूगरनी
चाचा भतीजा और समुद्री जादूगर
महाबली शाका और मौत की पहाड़ी
अण्डेराम डण्डेराम और मैडम डायना
टारजन और प्रेतनी का नाटक
मोटू पतलू और प्राईवेट खुफिया
चिम्पू और उड़न तश्तरी
चाचा भतीजा और जादूगरनी कुनानकुनकुन
लम्बू मोटू और धरोहरों का धमाका
मामा भांजा और रूप नगर की राजकुमारी
अण्डेराम डण्डेराम और तकदीर की हेराफेरी

चाचा चौधरी और रहस्यमय उल्लू
पिन्टू और सफेद प्रेत
फौलादी सिंह का अपहरण
टारजन और भयानक तूफान
अंकुर और शैतान का जाल
महाबली शाका और पहाड़ों की रानी

नये डायमंड कामिक्स

पिंकी के मम्मी पापा	५.००
पिंकू और मंगल पाण्डेय	५.००
पलटू और नए साल की पार्टी	५.००
चाचा भतीजा और उड़ने वाली छिपकली	५.००
फौलादी सिंह और शैतानों की टोली	५.००
मोटू छोटू और खजाने की लूट	५.००
राजन इकबाल और अद्भुत डकैती	५.००
छोटू लम्बू और भिखारी का प्रेत	५.००

नए डायमण्ड कामिक्स मार्च १९८९ में प्रकाशित

कार्टूनिस्ट प्राण का—चाचा चौधरी और राका से मुठभेड़	६.००
मामा भांजा और चालबाज शेर	५.००
मोटू पतलू और शौकिया होटल	५.००
महाबली शाका और पाताल दानव	५.००
अंकुर और विदेशी कार	५.००
पलटू और डाकू दमकल सिंह	५.००
राम लखन (चित्र कथा)	५.००
दशावतार (डाइजेस्ट)	१२.००

डायमंड पाकेट बुक्स में

■ आप अंग्रेजी जानते तो हैं लेकिन ठीक ढंग से बोल नहीं पाते।

■ क्या आप अच्छी अंग्रेजी बोलना सीखना चाहते हैं तो आज ही खरीदिये अंग्रेजी बोलचाल सिखाने वाला एक प्रभावी कोर्स

डॉयमण्ड इंगलिश स्पीकिंग कोर्स



जो आपको कुछ प्रभावित शब्द और वाक्य नहीं रटाता बल्कि अंग्रेजी भाषा की गहराई को समझाकर उस पर पूर्ण अधिकार करके ... जो हीन भावना घर कर जाती है उसे दूर करके ... ठीक ढंग से न बोल पाने से ... प्रभावी ढंग से अंग्रेजी बोलकर अपना मान व प्रतिष्ठा बढ़ाइये ... की कामना प्रदान करता है। अंग्रेजी प्रभावी ढंग से ... अपने कार्य, व्यवसाय व मित्रों में प्रभावित ढंग से अंग्रेजी ...

मूल्य ... डाक व्यय 5/-

डायमंड कामिक्स में

आप क्रिकेट सीखना चाहते हैं या आप क्रिकेट जानते तो हैं लेकिन उसके नियमों व खेल की तकनीक को पूरी तरह से नहीं जानते तो आज ही 'डायमंड कामिक्स' में 'प्रकाशित' 'क्रिकेट कैसे खेलें' (चार रंगे चित्रों में क्रिकेट सिखाने की पूरी जानकारी) हिन्दी व अंग्रेजी में एक साथ प्रकाशित।

क्रिकेट कैसे खेलें

भारत में पहली बार प्रकाशित हर क्रिकेट प्रेमी के लिये जरूरी पुस्तक।

मूल्य 6/- डाक व्यय 2/-

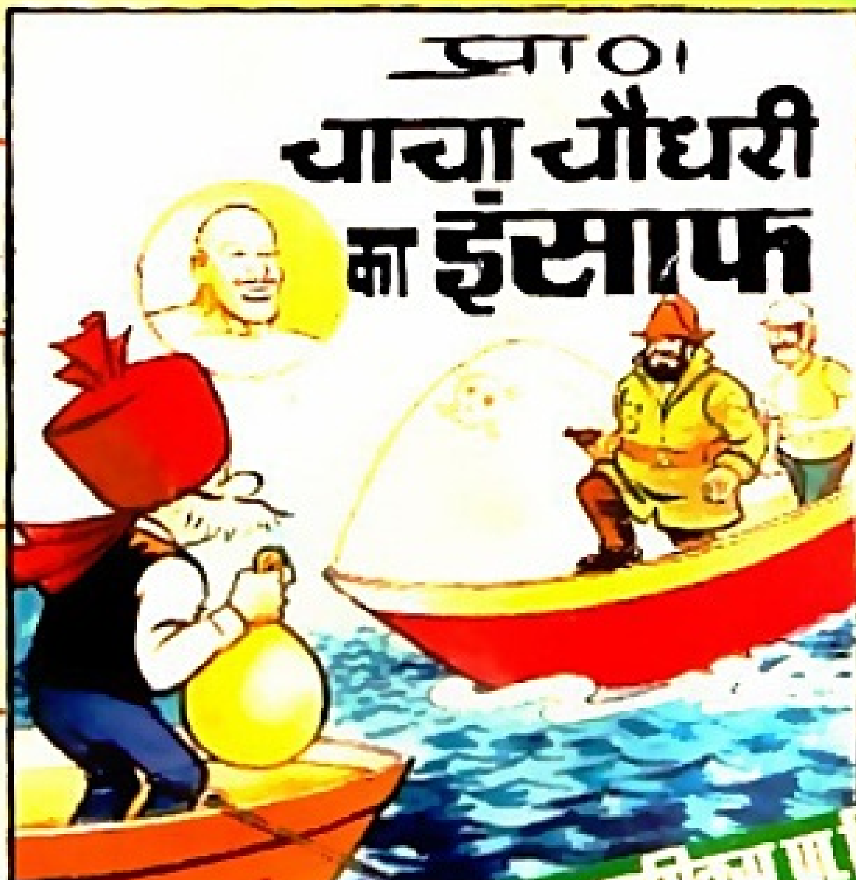


डायमंड पाकेट बुक्स प्रा. लि.
2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

डायमंड कामिक्स में

कार्टूनिस्ट प्राण का

चाचा चौधरी और साबू का नया हंगामा



डायमंड कामिक्स प्रा. लि.
2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002